ज्ञानामृत

दिसम्बर, 1989 वर्ष 25 ❋ अंक 6 मूल्य 2.00

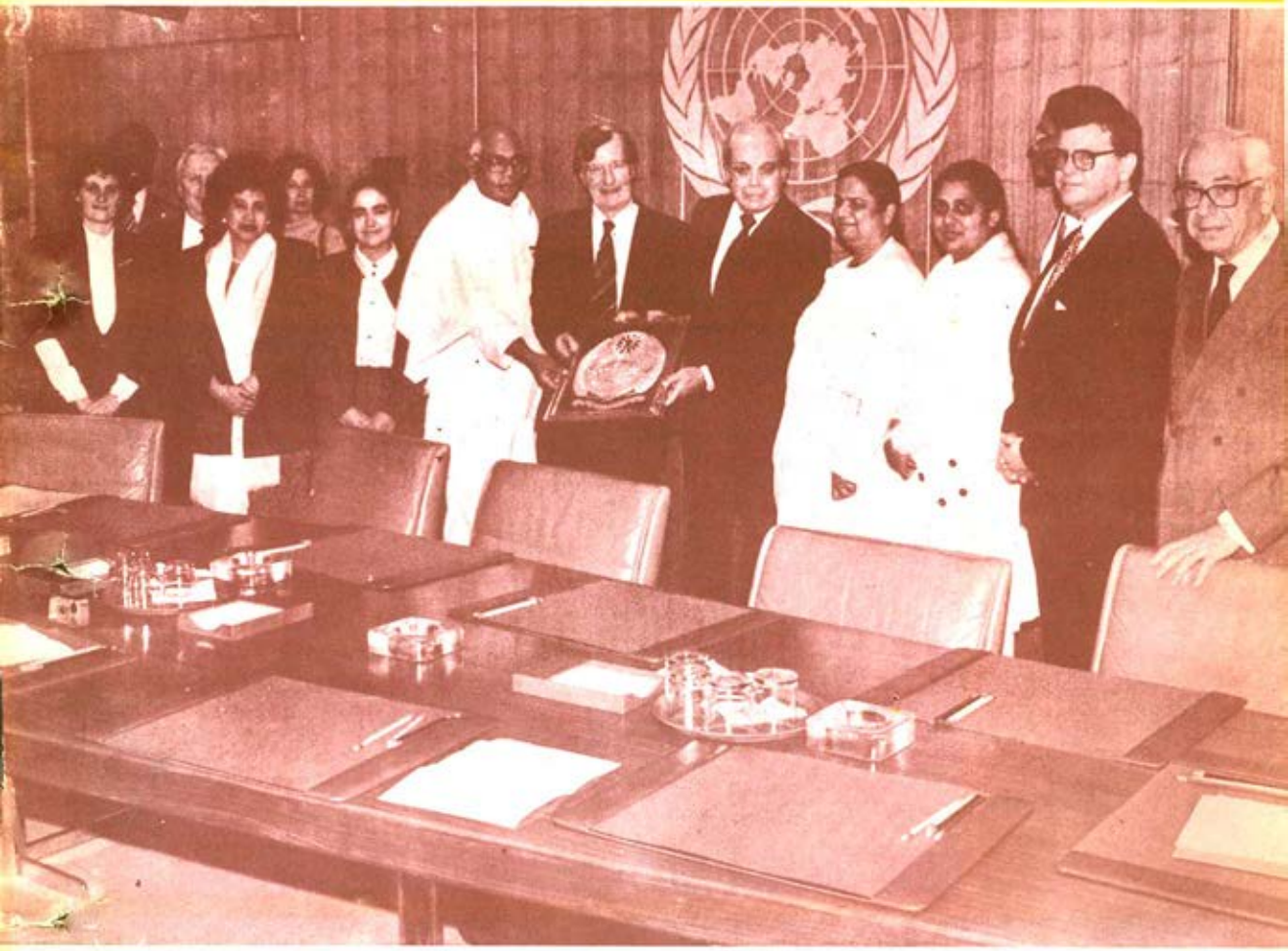

न्यूयार्क: ब्र.कु. जगदीश चन्द्र, मुख्य प्रवक्ता ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय, लॉर्ड एनल्ज़, ब्र.कु. मोहिनी तथा अन्य प्रतिनिधि ने संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्राता जावेर, पिरीज़ डी. क्युलर जी को 'धर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम की प्रथम वर्ष की सेवा रिपोर्ट देने के पश्चात् रजत प्लेक्यु भेंट करते हुए।

सम्बलपुर में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन के उद्घाटन के पश्चात् भ्राता एस.के. पाण्डा, ज़िला तथा सत्र न्यायाधीश, ब्र.कु. दादी निर्मल शान्ता जी तथा अन्य ब्र.कु. बहिनें शिवबाबा की याद में खड़े हैं।

ऊंट आबू में ओरया गांव में 'पीस र्क' का उद्घाटन दृश्य। ब्र.कु. दादी ाशमणि जी, दादी चन्द्रमणि जी था अन्य दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

भिवंडी: 'विश्व एकता आध्यात्मिक मेले' के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. रमेश जी अपने उद्गार प्रकट करते हुए।

फिजी: ब्र.कु. दादी जानकी जी पत्रकारों को प्रश्नों के उत्तर देते हुए।

देनकनाल: लक्ष्मी पूजा के अवसर पर ब्र.कु. निर्मल पुष्पा आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

बोकारो इस्पात संयंत्र के प्रशासनिक भवन के प्रबन्ध निदेशक कक्ष में भ्राता जगदीश चन्द्र जी 'तनावमुक्त प्रशासन' विषय पर प्रवचन करते हुए।

नन्दगढ़: डाक्टरों तथा प्रमुख व्यक्तियों के लिये रखी गई रचनात्मक कार्यशाला में भाग लेने वाले डाक्टरज़ तथा अन्य।

Regd. No. 10563/65-D, (E)-70

बोकारो स्टील सिटी में भ्राता जगदीश चन्द्र जी के पधारने पर वहां के मुख्य अतिथियों के साथ ग्रुप फोटो में।

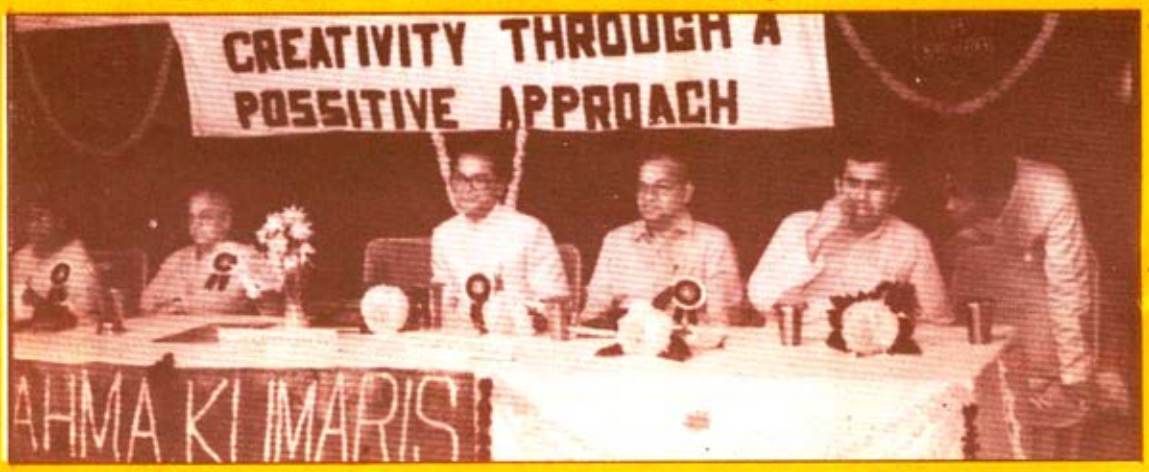

तिरूपति में 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के अन्तर्गत हुए शिक्षाविद् तथा आध्यात्मविद् सम्मेलन के खुले अधिवेशन में मंच पर उपस्थित हैं—ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. सुन्दरी, प्रो. नागेश्वर राव, भ्राता जी.वी. नरसिम्हा दास तथा ब्र.कु. मृत्युंजय।

कलकत्ता: 'तनाव रहित सफलता' विषय पर प्रवचन करती हुई दादी जानकी जी।

संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव द्वारा 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम की सराहना

न्यूयार्क: ७ नवंबर को 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' प्रोजैक्ट के अंतर्गत हुई सेवाओं की प्रथम वर्ष की रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव भ्राता जावेर, पिरिज डी. क्युलर को दी गई। जो प्रतिनिधि मंडल महासचिव को मिलने गया उनमें निम्न महानुभाव सम्मिलित थे।

लॉर्ड एन्नल्ज सह-अध्यक्ष 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम, जेम्ज जोनाह, सह-अध्यक्ष, रॉबिन लुडविंग, यू.एन. संयोजक, भ्राता जगदीश चंद्र 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' प्रोजैक्ट की अध्यक्षा दादी प्रकाशमणि जी के विशेष सलाहकार, ब्र.कु. मोहिनी, अंतर्राष्ट्रीय संयोजक, ब्रियान बेकन (ऑस्ट्रेलिया), मिरियम सुबिराना (स्पेन), एम. सलाह (जॉरडन), डॉ. सिति ज़ाहशह (उपमंत्री मलेशिया), केन बुचर (ट्रिनिडॉड तथा टुबेगो के प्रधानमंत्री के ऑफिस से।) प्रतिभा पाटिल (केन्या)। यह प्रतिनिधि मंडल महासचिव के कांफ्रेंस रूम में मिला तथा उन्हें 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के अंतर्गत सेवाओं की रिपोर्ट तथा 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम के अंतर्गत एकत्रित किये गए भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के सुखमय संसार, रेखाचित्र, संकल्पना चित्रों की एक एलबम भेंट की। इस एलबम में चालीस देशों के तथा १५ भिन्न-भिन्न भाषाओं के लोगों के चित्रित विचार थे जिसे देखकर महासचिव बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि आप तो संयुक्त राष्ट्र के मुकाबले में खड़े हो गए हैं। परंतु प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि हम तो संयुक्त राष्ट्र के कार्य में सहयोगी के रूप में कार्य कर रहे हैं। महासचिव जी ने कहा कि फरवरी में मैंने आपकी सेवा रिपोर्ट को बड़े ध्यान से पढ़ा था, मैं कहूंगा कि मैं बहुत ही प्रभावित हुआ क्योंकि इस प्रोजैक्ट में न केवल भिन्न-भिन्न और काफी विचार ही हैं परंतु 'सुखमय संसार' बनाने के लिए सही कार्यप्रणाली भी है। उदाहरण के तौर पर मुझे ग्रीस के उस परिवार का ध्यान आ रहा है जिन्होंने अपने घर में एक ऐसा स्थान बनाया है जहां गप लगाना, नकारात्मक शब्दों का प्रयोग तथा नकारात्मक वृत्तियों का रखना निषेध है। इससे बढ़िया तरीका शान्ति को कर्म में लाने का भला और कौन-सा हो सकता है? मेरे लिए यह एक उत्साहवर्धक बात है कि विश्व के लोग 'नये विश्व' को रचने की जिम्मेवारी लेने के लिए तैयार हो रहे हैं। उनका पारिवारिक तथा सामाजिक प्रयास हमारे अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का सहयोगी है।

मुझे यह मालूम है कि शान्ति कोई एक दिन में स्थापित नहीं हो जाएगी अत: मैं आपके इस दूरदर्शी प्रयास के प्रति आभारी हूं।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपकी दी हुई एलबम तथा प्लेक्यु अपनी पत्नी को दिखाऊंगा। इस बार मैं उसे 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' प्रोजैक्ट के बारे में समाचार दूंगा।

इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए प्रतिनिधि मंडल का उत्साह बढ़ाया। □

अमृत सूची

१.	संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव द्वारा 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' कार्यक्रम की सहारना	... १
२.	बदलते मंज़िर (सम्पादकीय)	... २
३.	सचित्र सेवा समाचार	... ४
४.	भगवान्–सच्चा प्रियतम्	... ५
५.	अंत का आदि...	... ८
६.	नशा एक बुरी बला	...१०
७.	आप अपना अमूल्य मत किसको देंगे?	...१३
८.	बाबा का प्यार	...१६
९.	आबू के आंचल में मधुबन मिल गया	...१६
१०.	आएगा सुखमय नव-संसार	...१६
११.	आलसियों के लिये खुशखबरी	...१७
१२.	विषय विकारों की दुर्गन्ध	...१८
१३.	सोवियत संघ में आध्यात्मिक सेवा का एक प्रवाह	...१९
१४.	सिनेमा देखने में क्या बुराई है?	...२१
१५.	भगवान् के साथ सर्व-सम्बंधों की अनुभूतियां	...२४
१६.	सच्ची समाज सेवा	...२५
१७.	ईश्वरीय सेवा के बल की गुप्त मदद मिलती है	...२८
१८.	"... और उत्तर मिल गया"	...२९

स्वार्थी नहीं सेवाधारी बनो

संपादकीय

बदलते मंज़र

वर्तमान समय विश्व-मंच पर देश-विदेश के दृश्य बड़ी तीव्र गति से बदल रहे हैं। पिछले लगभग एक वर्ष में संसार में आशातीत और आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं। रूस, जिसे लोहे के पर्दे (Iron Curtain) के पीछे का एक देश माना जाता था, अर्थात् जिसकी स्थिति-परिस्थिति का बाहर वालों को कुछ पता नहीं लग पाता था, अब पहले की अपेक्षा एक 'खुला' देश हो गया है। अब वहां नई राजनीतिक तथा आर्थिक संरचना हुई है और हो रही है। इस प्रकार के फेरबदल और नव-निर्माण को वहां की भाषा में 'पेरिस्ट्राइका' (Perestroika) कहा जाता है और अब हरेक बात को छिपाने की बजाय उसे जनता की जानकारी से करने की नीति को 'ग्लास्नास्ट' (Glasnost) कहा जाता है। पहले जिस तरह लोग वहां के गुप्तचर विभाग से डरे और सहमे रहते थे, अब वहां वैसी हालत नहीं है। अब लोग योग की चर्चा और धर्म की भी चर्चा करते हैं और उन पर वैसा आतंक नहीं रहा है। अब लोग घुटन से कुछ छुटकारा महसूस करते हैं और चिरकाल से बंद-जैसे वातावरण में चले आने के बाद वे अब छुटकारा पाकर योग आदि की चर्चा सुनने के लिए बहुत उत्सुक हैं। पहले भी उस साम्यवादी देश में सभी लोग नास्तिक नहीं थे बल्कि एक बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जो भगवान् और धर्म में आस्थावान थे परंतु राज-सत्ता के दबाव के कारण इस विषय में स्वेच्छा से खुलकर कुछ भी कार्यक्रम नहीं कर सकते थे। अब स्थिति ऐसी बदल गई है कि सरकार अगर लोगों को इससे रोकना भी चाहे तो वह उन्हें रोक नहीं सकेगी क्योंकि भगवान् और धर्म में आस्था के बिना जीवन की जो स्थिति होती है, वह भी उन्होंने चिरकाल तक देखी है और अब वे उस स्थिति में रहने को तैयार नहीं हैं।

अब पोलैंड में भी प्रायः ईसाई धर्म को मानने वाले लोगों की सरकार है। कुछ समय पूर्व वहां के चुनाव में साम्यवादी प्रतिनिधियों की हार और धर्मावलम्बी 'सालिडेरिटी' (Solidarity) का बहुमत होने के कारण अब प्रायः प्रभु-विश्वासियों ही की सरकार बनी है। अतः अब उस देश में भी धार्मिक अथवा योग-सम्बंधी कार्य-कलाप पर पहले की तरह कोई कड़ी निगरानी या सरकारी रोक-टोक नहीं है।

पूर्वोक्त दोनों देशों के राजनीतिक और आर्थिक ढांचे में इस परिवर्तन के प्रभाव स्वरूप हंगरी देश के सत्तारूढ़ दल के प्रतिनिधियों ने भी अपने मंत्रिमंडल को स्वतः ही भंग कर दिया और फिर अपनी शासन-प्रणाली में तथा राजनीतिक एवं आर्थिक रीति-नीति में काफी परिवर्तन करने का दृढ़ संकल्प किया है। वहां के नेताओं ने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की कि वे ठीक नीतियों को नहीं अपनाते रहे जिसके परिणामस्वरूप उनके देश का यह हाल हुआ है। इस प्रकार, अब हंगरी में वैसी स्थिति नहीं रहेगी जैसे अब तक धार्मिक कार्यक्रम करने वालों को वहां की खुफिया पुलिस डराती-धमकाती थी और उन पर कड़ी निगरानी रखती थी, अब उसमें परिवर्तन आएगा।

फिर पूर्वी जर्मनी में जो कुछ हुआ, वह कोई कम कौतुककारी नहीं था। वहां हजारों लोगों ने सड़कों पर और बाजारों में सरकार तथा साम्यवादी पार्टी के विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन किये। पहले तो पार्टी और सरकार ने उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की और जब देखा कि जनता में लहर इतनी फैल गई है कि हजारों-लाखों लोग देश छोड़कर हंगरी और चेकोस्लोवाकिया के रास्ते पश्चिमी जर्मनी में जाना शुरू हो गये हैं, तब उन्होंने भी मंत्रिमंडल को बदला, जनता से कुछ वचन किये और अपनी नीति-रीति बदलने का आश्वासन दिया। पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच जो दीवार थी, उसमें कई जगह अतिरिक्त रास्ते बना दिये गये ताकि जनसमूह जा सके। पूर्वी जर्मनी को छोड़ने वाले लोग इतनी खुशियां मना रहे थे कि बात मत पूछिए। सार-संक्षेप यह है कि वहां भी अब साम्यवाद का आतंक नहीं रहेगा और लोग निर्भय होकर दूसरे देशों में आ-जा भी सकेंगे और उनकी धार्मिक अभिरुचियों को सरकार साम्यवादी चश्मे से नहीं देखेगी।

जब एक-के-बाद-एक साम्यवादी देशों में यह प्रबल लहर चल रही थी, तब चेकोस्लोवाकिया भी इससे प्रभावित हुए बिना न रह सका और चेकोस्लोवाकिया में भी यह लहर पहुंच गई। चेकोस्लोवाकिया में भी अब मंत्रिमंडल बदला और वहां भी वह आतंक और दबाव समाप्त करने के आश्वासन दिये जाने लगे हैं।

चीन में भी वहां के युवा वर्ग ने पार्टी और सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन तो किये थे परंतु वहां की सरकार ने सेना के बल से उन्हें दबा दिया। परंतु आखिर वहां के वरिष्ठ नेता डांग ने राजनीतिक पद से त्याग-पत्र दे दिया और सरकार वहां भी कुछ सोच-विचार कर रही है ताकि वहां भी अन्य साम्यवादी देशों के जैसा हाल न हो। परंतु बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी?

कहने का भाव यह है कि संसार की आबादी का लगभग पांचवां हिस्सा जो पहले साम्यवाद के साये में था और वहां की सरकार के डंडे के नीचे भयग्रस्त था, अब अपनी धार्मिक जिज्ञासा को तृप्त करने की छूट पा सकेगा। यह हम इस कारण कह रहे हैं कि एक दिन चीन की एक अरब जनता भी उठ खड़ी होगी। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम उन तथा अन्य देशों में ईश्वरीय संदेश पहुंचाने की तैयारी करें। जब वहां साम्यवाद का

दबाव था तब सरकारी रीति के अनुसार धर्म को एक प्रकार की अफीम या अंधविश्वास या पूंजीपतियों का एक शस्त्र माना जाता था। परंतु आशा है कि इस बदलते दौर के बाद अब लोगों को धर्म के बारे में भी छूट मिलेगी।

इधर हम भारत के भीतर की स्थिति पर दृष्टि डालते हैं तो यहां भी द्रुत गति से राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक वातावरण बदला है। पिछले दो वर्षों में अधिकतर लोग मानने लगे हैं कि भ्रष्टाचार और हिंसा बहुत ही बढ़ गया है। फिर, यहां चुनाव के दिनों में जो कुछ हुआ है, वह सभी के सामने है। आज सभी कहने लगे हैं कि सरकार भ्रष्टाचारी है। विरोधी दल ने सरकारी दल के नेताओं की तुलना धृतराष्ट्र, दुर्योधन, शिशुपाल आदि से और अपने पक्ष के नेताओं की तुलना भीष्म, द्रोणाचार्य आदि से की है। एक ओर दूरदर्शन से महाभारत के सीरियल दिखाए जा रहे हैं दूसरी ओर सभी ने महाभारत से उदाहरण दे-देकर वर्तमान समय के भारत को 'कुरुक्षेत्र' से और यहां की स्थिति को महाभारत काल की स्थिति से तुलना की है। चुनाव के दौरान अनेक नेताओं (रामाराव, देवीलाल आदि) ने 'रथों' का प्रयोग भी किया और सभी ने एक-दूसरे को इलैक्शन 'लड़ने' के लिये ललकारा। इस समय सारे भारतवर्ष में वर्तमान रथ—जीपें, सजे हुए वैन और कारें ले-लेकर नेता एक-दूसरे को ललकार रहे थे। कोई हार खा गया तो कोई कुछ हजार वोटों से 'मार' खा गया या परास्त हो गया। इसका अर्थ तो यह हुआ कि महाभारत ग्रंथ जिस 'कुरुक्षेत्र' की और 'युद्ध' की चर्चा करता है, वह आज के समस्त भारत और उनके इस राजनीतिक झगड़े के परिचायक हैं। वे आज के शासक दल और विपक्ष का तथा आज की परिस्थिति का एक सटीक चित्रण है।

आज राजनीतिक और आर्थिक आक्षेपों को लेकर देश में हाहाकार-सा मचा हुआ है। देश के सारे लोगों का मन इसी ओर लगा हुआ है। सभी परोक्ष या अपरोक्ष रूप में इस 'युद्ध' में भाग ले रहे हैं। कहीं हिंसा भी हो रही है तो कहीं जबान के घाव लगाये जा रहे हैं और कहीं विरोधी दल के नेता पर शब्द-प्रहार किया जा रहा है। 'प्रतिद्वंद्वी', 'विरोधी', आदि शब्द, जिनका प्रायः लड़ाई में प्रयोग होता है, इस संग्राम में भी प्रयोग हो रहे हैं। 'एक-से-एक' लड़ने की भी स्थिति बना दी गयी है और हजारों वर्करों ने घेराव डालने की भी परिपारी को भी अपनाया है।

दूसरी ओर देश में राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद के विवाद को लेकर भी आग सुलगाना शुरू हुई है। पंजाब में जो कुछ हो रहा था, वह तो चल ही रहा है। इन अन्य दो धर्मावलम्बियों में मन-मुटाव की बात सामने आई है। यह भी कोई कम महत्त्व का घटक नहीं है।

इस प्रकार यदि विश्व के बदलते मंजिर पर ध्यान डाला जाए तब एक ओर तो तीव्र गति से साम्यवादी देशों में संदेश पहुंचाने का अवसर मिला है और दूसरी ओर यहां जो अंधकार छाता जा रहा है और लोग सभी राजनीतिक दलों से निराश होते जा रहे हैं और निकट भविष्य में वे भी भगवान् ही का सहारा ढूंढ़ने की स्थिति की ओर आ रहे हैं। अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम जल्दी से ऐसे साधन अपनाएं जिनके द्वारा संसार के इन देशों में शीघ्रता से ईश्वरीय संदेश पहुंचे।

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जो प्रतिनिधि अभी रूस में सेवा कर रहे हैं, उससे स्पष्ट है कि रूस में भी सहज राजयोग के सीखने की काफी रुचि है। इधर अमेरिका में स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में 'माऊंट आबू घोषणा-पत्र' (Mount Abu Declaration) का रखा जाना और उधर रूस में ईश्वरीय सेवा की शुरुआत होना तथा चीन में भी इस ईश्वरीय संस्थान के प्रतिनिधियों का पर्दापण होना इस बात के प्रतीक हैं कि समय की रील अब बहुत जल्दी लिपट रही है। परमपिता शिव और अव्यक्त ब्रह्मा के मधुबन में हो रहे अव्यक्त पार्ट की प्रणाली में भी जो परिवर्तन आया है, वह भी इस बात को इंगित करता है कि अब बड़ी शीघ्रता से हम ड्रामा के अंतिम दौर में से गुजर रहे हैं और अब हमें स्व-उन्नति का पुरुषार्थ तथा ईश्वरीय सेवा, दोनों ही बहुत लगन से कर लेने चाहिएं। □

-जगदीश

जगदलपुर: ब्र.कु. ओम प्रकाश जी ग्राम बड़ेधराऊर में प्रवचन करते हुए।

जालना: संसद सदस्य बालासाहेंब पवार, नगराध्यक्ष रमेश जी सेवाकेन्द्र पर पधारें। ब्र० कु० सुधा सौगात देते हुए।

कलकत्ता (रायबगान): *पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री भाता ज्योति बसु जी को माऊंट आबू में ई.वि. विद्यालय के मुख्यालय में पधारने का निमन्त्रण देते हुए भाता मृत्युंजय जी।*

जमखंडी: कर्नाटक के राज्यपाल भाता वेकन्ट सुब्बैया जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए। ब्र० कु० मीरा जी।

केशोड: आर्टस एन्ड कार्मस कालेज में विद्यार्थियों और शिक्षकों के समक्ष युवा-नैतिक जागृति विषय पर प्रवचन करती हुई कण बहिन।

भगवान्–"सच्चा प्रियतम्"

□ बी.के. सूर्य, माउण्ट आबू

भक्ति में प्रेम का महत्त्व रहा और संन्यास में समाधिस्थ होने का। ऋषियों ने स्वयं को भुलाकर परमपिता से एकीकार होने की साधना की तो भक्तों ने वसुंधरा पर प्रेम की सरिता बहाई। कई भक्तों ने भगवान् को अपने वत्स के रूप में देखा तो कईयों ने उसे अपनी मां के रूप में स्वीकार करके उसके प्यार का परम आनंद लिया। किसी ने उसे अपना मित्र बनाकर उसका सामिप्य प्राप्त किया तो किसी ने उसे सच्चा प्रियतम् बनाकर उसके प्रेम में स्वयं को भावविभोर कर दिया। उस एक परमपिता को ही भक्तों ने भिन्न-भिन्न रूप से स्वीकार किया। ये सब आनंद अनुभूति के तरीके हैं, भगवान् से प्यार बढ़ाने के पथ हैं। कवियों ने तो मुक्त कंठ से गान किया–"हरि मौरे पियू, मैं हरि की बहुरिया"...

सृष्टि चक्र में तब सबसे सुंदर घटना घटी जब भगवान् अपना धाम छोड़कर अपनी सजनियों से मिलने आया। उसकी सजनियां (मनुष्यात्माएं) उसे ढूंढ़ रही थीं। उनका प्यार यहां-वहां बंट चुका था, इसलिए वे परेशान थीं। उस प्राणेश्वर परमात्मा ने आकर याद दिलाया–"तुम मेरी हो, मैं तुम्हारा हूं।" मैं वही हूं जिसे तुम ढूंढ़ रहे थे, मुझे पहचानो। मैं ही तुम्हारा सच्चा प्रियतम् हूं... निराकार प्रियतम् और 'साकार में निराकार' प्रियतमाएं... कैसा अनोखा संगम हुआ...

वह आया और उसने आत्माओं को अपना बनाया। किसी ने उन्हें बाप रूप में प्राप्त किया, किसी ने सखा रूप में। किसी को उनसे मां की ममता मिली तो कोई उसकी सजनी बनी। उसकी सर्वश्रेष्ठ प्रियतमा बनी प्रजापिता ब्रह्मा। वे उसके प्यार में इतने लीन हुए कि अपनत्व ही भूल बैठे।

आध्यात्म–साधना के पथ पर एकाग्रचित होने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि भगवान् ही हमारे आकर्षण का संपूर्ण केंद्र हो। इसके लिए भी यह आवश्यक है कि हम उसे अपना सर्वस्व बना लें अर्थात् उससे सर्व सम्बंध जोड़ लें। क्या ज़रूरत है इन सर्व सम्बंधों की? कई सोचते हैं 'बाप' रूप में ही सब-कुछ है। उसी से तो वर्सा लेना है। कई मानते हैं कि उनका परमशिक्षक रूप सर्वश्रेष्ठ है जिससे हमें संपूर्ण सत्य-ज्ञान मिला। कोई सद्गुरु से प्यार करते हैं। कोई ये भी कहते हैं कि हमारी तो बुद्धि किसी लौकिक सम्बंध में जाती ही नहीं, फिर भला हम यह पुरुषार्थ क्यों करें?

परंतु 'सर्व सम्बंध' जोड़ने का रहस्य केवल इतना ही नहीं है। एक-एक सम्बंध का आनंद ही अनोखा है। बाप का सुख अलग तो मां की ममता अलग। सखा की मित्रता अलग तो साजन का प्यार अलग। संपूर्ण ईश्वरीय प्राप्ति हेतु विभिन्न सम्बंधों का रस अनुभव करना आवश्यक है। एक भी रस की कमी, निरंतर योग की साधना पर सफल नहीं होने देगी। एक भी रस का अभाव, अंतिम समय अतृप्ति का अनुभव करायेगा।

कुछ मनुष्यात्माएं जो पुरुष तन में हैं, भगवान् को प्रियतम् बनाने में लज्जा का अनुभव करती हैं। यह उनका देहभान है। स्वयं को पुरुष मानना ही देहभान है। 'आत्मा' स्त्री-पुरुष नहीं होती। आत्मा तो शिव की सजनी है। प्रियतम् का अर्थ है–वह जिससे हम अधिकतम प्यार करते हों। ईश्वर उन सभी का सच्चा प्रियतम् है जो उसे ही प्यार करते हैं। यह जानकर हम उनसे प्रियतम् का नाता जोड़ लें।

कहते हैं–मीरा जब चित्तौड़ से वृंदावन गई और उसने वहां के महात्मा से मिलने की अनुमति चाही, तब उस श्रीकृष्ण-भक्त महात्मा ने कहलवा भेजा कि हम पुरुष नारियों से नहीं मिलते। मीरा ने उत्तर भेजा कि मैंने तो सुना था कि वृंदावन में केवल एक ही पुरुष हैं–श्रीकृष्ण, बाकी सभी उनकी गोपिकाएं हैं फिर आप पुरुष कहां से आये। यह सुनकर महात्मा इस रहस्य को समझ गये और मीरा को वहां रहकर अपने प्रियतम् में लीन होने की अनुमति दे दी।

तो परमपिता परमात्मा हमारे प्रियतम् भी हैं। उनसे यह सम्बंध जोड़कर उसे निभाने के लिए कुछ बातों में हम इसका विश्लेषण करेंगे। इस सम्बंध का कितना सुख है? एक पत्नी का जीवन पति के बिना नीरस हो जाता है, भले ही उसके मात-पिता, भाई-बहन हों। तो शिव को प्रियतम् बनाना है, उससे विभिन्न अनुभव भी करने हैं। इसके लिए...

बुद्धि इस सम्बंध को स्वीकार कर लें–

ज़रा ध्यान दें कि लौकिक में स्त्री-पुरुष का सम्बंध किस तरह जुड़ता है? पहले एक-दूसरे का परिचय होता है, फिर वे एक-दूसरे को स्वीकार कर लेते हैं और इस प्रकार सम्बंध के बंधन में बंध जाते हैं। इसी तरह पहले तो हमने इस धरा पर आये हुए निराकार परमपिता को पहचान लिया और फिर यह मान लिया कि यह वही है, जिससे मिलने की हम इंतज़ार कर रहे थे। यही हमारा सच्चा प्रियतम् है, हमारे प्राणों का पति है, हमारे

नयनों का तारा है... हमारा प्रियतम् बहुत दूर से और बहुत वर्षों के बाद हमारे घर (इस धरा पर) आया है... बस, यह मान लेना ही उससे अपना नाता जोड़ना है। हमारे विवेक में दुविधा न रह जाए कि पता नहीं कि यही वही है या अन्य कोई...? सुना होगा कि पार्वती को उसकी सखियां बार-बार कहती थीं कि तुम उस भिखारी से क्यों शादी करती हो? परंतु उसे निश्चय था कि वह भिखारी नहीं, साधारण वेश में शिव ही है। इसी तरह हमारे निश्चय में हमारा प्रियतम् बसा हो और एक बार दिल से जब हम उसका वरण कर लें तो बस सदा-सदा के लिए ही हमारा प्रियतम् हो। वैसे भी प्रसिद्ध है कि हिंदू नारी केवल एक बार ही दिल से किसी का वरण करती है। विदेशों की तरह उसके प्रियतम् बार-बार नहीं बदलते, उसकी आंख भी कहीं अन्यत्र नहीं जाती।

हमें इस सम्बंध की खुशी व नशा हो–

यदि किसी कन्या की शादी किसी सम्पन्न, धनवान या ऊंच पद पर नियुक्त व्यक्ति से हो जाए तो उसकी खुशी आसमान छूने लगती है, उस नशे में उसके पैर धरती पर नहीं पड़ते... अब वही उसके नयनों में बसा होता है, दूसरे सभी उसे पराये लगते हैं। इसी प्रकार जब अब हमने भगवान् को अपना साजन चुन लिया तो हमारी खुशी देवताओं को भी लज्जित करे... हमारा नशा संसार के सभी आकर्षणों से हमें मुक्त कर दे। हमें नशा हो–वाह! हमारा प्रियतम्–विश्व में सुंदरतम... विश्व का मालिक... सर्व समर्थ... सर्वगुणों का सागर... सबसे अधिक बलवान... बुद्धिमानों को भी दिव्य बुद्धि प्रदान करने वाला...

बस, हम अपने सलोने साजन को निहारते ही रहें, निहारते ही रहें... उसकी छवि को पुनः-पुनः देखकर हमारा मन न भरे। हमारा प्रियतम् स्वयं भगवान्..., हमें किसका डर? हमें इतना नशा हो जाये कि वह हमारे रूप में समा जाए। कोई यदि हमें देखे तो हम नहीं, वही दिखाई दे। देखने वाले कहें कि ये तो उसी के हो चुके, ये तो अपने प्रियतम् के प्यार में सदा-सदा के लिए खो गये...। किसी प्रियतमा ने गाया भी है–"मेरो मन अनत कहां सुख पावे"–बस यही स्थिति हो, उसके बिना अन्यत्र मन ही न लगे, उसे देखे बिना सुख ही न मिले...

हमारा प्रियतम् हमसे क्या चाहता है?

लौकिक सम्बंध में भी इसी बात का ध्यान रखा जाता है। हमें इस बात का एहसास हो कि शिव-साजन हमसे क्या चाहता है? यदि हम उसकी इच्छा के विरुद्ध चलेंगे तो उसके प्यार के पात्र भी नहीं बनेंगे और इस सम्बंध का सुख भी प्राप्त नहीं होगा। उसने हमारी सारी मनोकामनाएं पूर्ण की हैं। यदि हम उसे अपने प्यार की डोरी में बांध लें तो वह हमारे लिए सब-कुछ करेगा। हमारे प्यार को निभाने के लिए वह भी हम पर कुर्बान होगा। तो हमारा प्रियतम् हमसे चाहता है कि–

- कि मेरी प्रियतमाएं मेरे समान हों, गुणों में भी समान हों और शक्तियों में भी। मैं सुखदाता हूं तो ये भी बनें, मैं प्यार का सागर हूं तो ये भी बनें। यदि सजनियां ऐसी नहीं होंगी तो साजन की बदनामी ही कराएंगी और तब उसका संपूर्ण सुख भला कैसे मिलेगा...? यदि एक सर्वशक्तिवान् हो और दूसरा कमजोर तो कैसे निभेगी...। एक गुणों का सागर व दूसरा निर्गुण, तो भी रस नहीं आयेगा।

- वह चाहता है कि मेरी प्रियतमाएं संपूर्ण पावन हों। उसमें देहभान की दुर्गन्ध न हो। यह बदबू उसे तनिक भी प्रिय नहीं। देहभान में रहना तो ऐसा ही है, मानो स्वयं को कमरे में बंद रखना। तब भला प्रियतम् से मिलन कैसे होगा?

- वह चाहता है कि उसकी प्रियतमाओं में अहं की अकड़ न हो, ये क्रोध की अग्नि में भी न जलें। ये मेरी ही तरह शीतल हों। परंतु यदि सजनियां आपस में ही टकराती रहेंगी, ईर्ष्या-द्वेष में जलती रहेंगी तो जब प्रियतम् से मिलन होगा तो परम सुख का अनुभव नहीं होगा क्योंकि वे दूसरों की शिकायतें ही करती रहेंगी।

- भगवान् चाहता है कि मुझ दाता की सजनियां पूर्णतया संतुष्ट हों, इधर-उधर चाहना की दृष्टि से देखने वाली न हों। वे पूर्णरूपेण रॉयल हों। सागर समान सम्पन्न भगवान् की प्रियतमाएं होकर यदि सजनियां अतृप्त रहें, यदि उनकी दृष्टि सांसारिक वैभवों में जाए तो प्रियतम् को कैसा लगेगा! यह उसके स्वमान के पूर्णतया विरुद्ध होगा। ऐसा करना उसका अनादर करना होगा।

- वह चाहता है कि मेरी सजनियां सदा मेरे ही साथ रहें, मेरे से ही दिल की बातें करें। ऐसा न हो कि प्रियतमाएं मेरी और दिल की बातें किसी और से करें। परंतु यदि हम केवल ५-१० मिनट ही सारे दिन में उसके साथ रहें तो उस परम-प्रियतम् के प्यार का परम सुख कैसे मिलेगा? कई कहते हैं–कि हम सवेरे उठकर तो योग करते हैं परंतु ईश्वरीय प्यार तो मिलता नहीं। तो अधिक-से-अधिक समय उनके साथ रहने से ही उसका सच्चा सुख अनुभव होगा।

- क्योंकि यह सम्बंध परम पवित्रता पर आधारित है इसलिए वह चाहता है कि मेरी सजनियां अन्य किसी से प्यार न करें। यही इस सम्बंध में **वफादारी** है। लौकिक में भी यदि किसी की पत्नी किसी अन्य पुरुष से प्यार करे तो परिणाम हम जानते हैं। यहां भी यदि हम प्रियतमाएं किसी और से प्यार करेंगी तो यह हमारी वफादारी नहीं होगी, हमारा परम प्रियतम् हमसे खुश भी न होगा और हम उसकी नजरों से भी गिर जायेंगी। और भगवान् की

नजरों से गिर जाना माना उच्च पद से गिर जाना, माना स्वर्ग से गिर जाना।

वह यह भी हमसे चाहता है कि मेरी सजनियां आज्ञाकारी हों। एक-दूसरे का कहना मानें। यदि हम उसका कहना मानेंगी तो वह भी हमारा कहना मानेगा। इस प्रकार उसे प्रसन्न करके हम उससे संपूर्ण सुख प्राप्त कर सकेंगे।

इस सम्बंध में प्यार कैसे बढ़े?

इसी सम्बंध में सबसे अधिक प्रेम व समीपता होती है। परंतु यहां क्योंकि हमने निराकार का वरण किया है, इसलिए यह प्रश्न उठता है कि प्यार कैसे बढ़े? हम जरा यह तो देखें कि उस परम प्रियतम् का हमसे कितना प्यार है!

हमारे लिए वह अपना धाम व काम छोड़कर आया। उसने हमारा कुरूप व हमारे अवगुण न देखकर हमें स्वीकार कर लिया। उसका हमसे सच्चा प्यार है, वह सचमुच हमें बहुत चाहता है। वह हमारा इतना श्रृंगार कर रहा है कि विश्व में बस हम ही हम चमकेंगे, सारा विश्व देख सकेगा कि ये भगवान् की सच्ची प्रियतमाएं हैं। वह हमारे लिए इस गंदी दुनिया को स्वर्ग बना देता है, सभी आत्माओं को मुक्ति में बैठाकर हमें स्वर्ग का राज्य दे देता है। हमें अपने नयनों में छुपाकर घर ले जाता है। जरा सोचें वह हमें क्या बना देता है! कितनी मेहनत करता है वह, एक-एक का श्रृंगार करने में! जब भी याद करो, नंगे पैर दौड़ आता है हमारे पास... इस प्रकार जब हमें उसके प्यार का एहसास होगा तो हमारा प्यार भी दिनोंदिन बढ़ता जायेगा। और एक दिन आयेगा कि वह ही हमारा संसार बन जायेगा।

उसके प्यार की ही तो यह निशानी है कि वह हमारी कमियों को देखना नहीं चाहता। हमारी कमी उसे अपनी कमी लगती है। वह हमें कमजोर नहीं देखना चाहता। वह हमें भरपूर, शक्तिशाली व स्वमान युक्त देखना चाहता है। उसे कैसा लगता होगा यदि कोई उसकी एक भी सजनी की ग्लानि करे।

जो कुछ वह हमसे चाहता है, यदि वैसा ही हम करेंगे तो उसके परम निर्मल प्यार के पात्र बन जायेंगे। हमारा भी उनसे अनुपम प्यार हो। प्यार की निशानी है कुर्बानी। उसके प्यार में यदि कोई लोक-लाज की दीवारों को न फांद सकें या कुछ सहन करने से डरे या लोगों के कटु प्रहारों से डरे तो यह सच्चा प्यार नहीं। उससे प्यार माना उसके यज्ञ से भी प्यार और उसकी सेवाओं से भी प्यार। सेवाओं में आनाकानी करना सच्चे प्यार का परिचायक नहीं। प्रेम कुर्बानी चाहता है और कुर्बानी से ही प्रेम बढ़ता है। इसी प्रकार ईश्वरीय मर्यादाएं भी इस स्नेह को बढ़ने का माध्यम हैं। उनका उल्लंघन करना माना प्रियतम् को व अनेक प्रियतमाओं को नाराज करना।

ईश्वर से प्रेम जोड़कर झूठे ऐश्वर्यों में मन लगाए रखना झूठे प्यार की निशानी है। यदि कोई पत्नी, पति से प्रेम न करके उसके द्वारा दी गई वस्तुओं से ही प्रेम करे तो इसे क्या कहेंगे? ऐश्वर्य हमारे ईमान का इम्तिहान है। यदि हम ऐश्वर्यों में मग्न हो गये तो हमारे मन का प्यार अवश्य ही मलीन हो जायेगा।

अधिकारों का प्रयोग करें--

हम उनके इतने समीप पहुंच जाएं, हम उसके दिल को इतना जीत लें कि वह हमारी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करे। परंतु यह तब ही संभव होगा जब हम उसकी इच्छाएं पूर्ण करने होंगे। यदि हम उसकी बात मानेंगे, तो वह भी हमारी बात मानने के लिए बंध जायेगा। तो प्रियतमाओं का प्रियतम् पर अधिकार होता है, हम उस अधिकार का प्रयोग करें।

एक पत्नी अपने पति से कई काम करा लेती है। पुराणों में पार्वती की जिद्द पर शंकर को कई काम करते हुए दिखाया है। हम भी सवेरे-सवेरे, उस प्रियतम् के साथ विश्व की सैर पर जाने की जिद्द कर सकते हैं, सूक्ष्म वतन में उसके साथ रहने की दिल रख सकते हैं, किसी विशेष अनुभव करने की जिद्द कर सकते हैं। और वह हमारे प्यार में बंधकर अनुभव अवश्य ही करायेगा। भगवान् प्यार से ही बांधा जा सकता है। गोपिकाओं ने उसे प्यार में बांधा। कंस व कौरव उसे बलपूर्वक बांध न सके। कोई भी यदि विघ्न आ जाए तो हम अपने प्रियतम् को कह सकते हैं कि इसे समाप्त करो–वह हमारी प्रत्येक आवाज सुनेगा। इस प्रकार अधिकारों का प्रयोग कर अनुपम अनुभवों की शुरुआत की जा सकती है। वह हमारा हो गया, भगवान् हमारी मुट्ठी में है उस पर हमारा अधिकार है। कई नितांत कठिन काम भी उससे कराये जा सकते हैं।

भिन्न-भिन्न अनुभव करें–

हमारा मन उसके प्यार से ओत-प्रोत हो। हमारे नयनों में उसके सिवाय अन्य किसी की भी छवि न बसती हो... हम पूर्ण वफादार व निष्ठावान हों... तो बस उसका सर्वस्व हमारा...। पत्नी, पति के प्रति पूर्णतया निष्ठावान व समर्पित होती है। हम भी परम प्रियतम् पर व उसके सिद्धांतों पर पूर्णतया समर्पित हों। यदि हमारा आकर्षण कहीं ओर गया, यदि हमारी नजरें कहीं ओर लगीं तो वह प्रियतम् हमें स्वीकार नहीं करेगा।

तो वह ही वह हो हमारे अंग-संग। हम एक पल भी उससे अलग न हों..., उसे कहीं जाने ही न दें..., उसी के साथ खायें, उसी के साथ सोयें, उसी के साथ घूमें...। उसका अव्यक्त रूप निहारकर उसका आह्वान कर लें। इस प्रकार हमें भिन्न-भिन्न अनुभव होंगे, परंतु वे अनुभव देहभान के नहीं, ईश्वरीय रसों के होंगे।

इस सम्बंध का वर्सा मिलता है–संपूर्ण पवित्रता। अर्थात् हम

शेष पृष्ठ २७ पर

अंत का आदि

□ बी.के. रमेश, गामदेवी, बंबई

आदि मध्य और अंत यह क्रम विश्व में सभी व्यक्त बातों और वस्तुओं में देखा गया है। आत्मा अजर अमर होते भी, शरीर के परिवर्तन रूप से देखा जाए तो जन्म, जरा और मृत्यु है ही। वृक्ष आदि प्रकृति की रचना में बीज से वृक्ष और फल और फिर बीज इस क्रम का गायन है। आत्मा अमर है परंतु फिर भी परमधाम से अलग-अलग समय पर आकर और सृष्टि के अंत के समय पर वापस परमधाम जाना है—यह सत्य ज्ञान अब हमें हुआ है।

सृष्टि भी परिवर्तनशील है—पहले उसके पांच तत्त्व—सतोप्रधान फिर सतो, रजो और तमोप्रधान होते हैं और फिर सृष्टि चक्र की पुनरावृत्ति होती है और नये कल्प की शुरुआत होती है। विनाश, कयामत आदि-आदि शब्द से सभी धर्मवाले परिचित हैं।

यह विनाश कैसे होगा इसके लिये सभी धर्मों ने अपनी-अपनी दृष्टि से व्याख्या भी अपने धर्म के अनुयाइयों को बतायी है। उसी समय अधर्म बढ़ेगा, आकाश से अग्नि की बरसात होगी, अकाल होगा—इस प्रकार के विभिन्न चिन्ह बताये गये हैं।

परमपिता शिव परमात्मा का अवतरण भी इस विश्व परिवर्तन के कार्य अर्थ होता है। जन्म-मरण रहित होने के कारण विश्व परिवर्तन की घड़ी के बहुत नजदीक होने के कारण इस पुराने विश्व के अंत के समय क्या-क्या होगा—यह बातें ज्यादा स्पष्ट और विस्तृत रूप में वह बताते हैं। हमें अनेक प्रकार के इस प्रकार के चिन्ह उन्होंने बताये हैं। जैसे कि आर्थिक व्यवस्था बिगड़ जायेगी, अन्न मिलना मुश्किल हो जायेगा, ईश्वरीय सेवा करना कठिन हो जायेगा रोज मुरली सुनना तथा ज्ञान-स्नान अर्थ क्लास में आना कठिन होगा। वाहन व्यवहार दुर्लभ होगा, महंगाई बहुत बढ़ जायेगी। चोरी लूटमार आदि बहुत बढ़ेगी। सरकार रक्षा करने में असमर्थ होगी। और दिन-प्रतिदिन यह सब प्रकार की अव्यवस्था की मात्रा जो प्रारंभ में कम होगी वह बाद में तीव्र होती जायेगी। इस प्रकार का विस्तृत ज्ञान अंत के समय का हमें प्राप्त है।

आज तक हमने यह ज्ञान सिर्फ शब्दों में सुना था। परंतु उसी का व्यवहारिक एवं वास्तविक रूप प्रत्यक्ष रूप में, प्रयोगात्मक रूप से, किसी एक स्थान पर विशेष रूप से नहीं देखा था। किंतु थोड़े समय पहले जब मैं ईश्वरीय सेवा अर्थ विदेश यात्रा पर गया था तो मैंने वहां इस सब प्रकार के अनेक अर्थात् परिवर्तन की घड़ी के विशेष चिन्ह वहां उसी के प्रारंभिक परंतु वास्तविक स्वरूप में देखे। वहां वाहन व्यवहार कठिन हो गया है। अन्न की समस्या बहुत है। गरीबी बहुत बढ़ी है और महंगाई अपनी चरमसीमा पर है। घरों में चोरी बहुत होती है, उसी कारण घर बंद करके बाहर जाना असंभव है। रोज ज्ञान-स्नान करने उसी कारण सब नहीं आते। देश की आबादी भी ४०% से अधिक कम हो गई है अर्थात् लोग अमेरिका, केनेडा आदि स्थानों पर स्थानांतर करके चले गये हैं। बुद्धिजीवी या जिन्हों के रिश्तेदार विदेश में हैं वह उनके पास चले गये हैं और अब विशेष रूप से गरीब या जिन्हों के रिश्तेदार विदेश में नहीं हैं या जो अमेरिका केनेडा आदि स्थानों की ठंड सहन नहीं कर सकते हैं ऐसे ही व्यक्ति अब देश में ज्यादा हैं।

क्लास में एक समय १००-१२५ बहन-भाई नियमित आते थे। अब विशेष करके सब विदेश चले गये हैं और अब वहां बहुत थोड़े रहे हैं। उनमें से भी सब क्लास में रोज प्रातः समय नहीं आते क्योंकि चोरी का डर है या आने के लिए वाहन नहीं है। वहां ईश्वरीय सेवा अर्थ सभी वर्तमान सेवा के साधन उपलब्ध हैं। फिर भी वहां अपने संग्रहालय में बहुत कम लोग आते हैं। प्रदर्शनी, प्रोजेक्टर-शो, सम्मेलन आदि कम हो गये हैं। योगाभ्यास के विशेष शिविर में पहले बहुत लोग रुचि पूर्वक आते थे। अब इस वर्ष मुश्किल से, बच्चों की योग शिविर में ५-६ बच्चे आये थे। अपने बहन-भाई जो नियमित विद्यार्थी थे वह भी अपने जीवन-निर्वाह अर्थ की समस्या को दूर करने में व्यस्त हैं। मुश्किल से कोई मधुबन आ सकेगा।

मतलब प्रारंभिक लक्षण अंत के समय के स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। अपने ऑस्ट्रेलिया का भ्राता रोबीन रामसे के कार्यक्रम में वहां के राष्ट्र प्रमुख आदि आये थे। परंतु वह रौनक हमने ८-१० साल पहले जो देखी थी वह नहीं थी। निस्तेज, गतिशून्य, आर्थिक, अन्न तथा अन्य समस्याओं के बंधन में बंधा ऐसा जीवन व्यवहार आम जनता का देखा।

ईश्वरीय सेवा के वर्तमान सभी साधन होते भी सेवा दुर्लभ तथा कठिन हो गई है। और यदि सेवा करना चाहें तो भी करें किसकी? जनसंख्या ही बहुत कम हो गई है। सरकार भी अपनी समस्याओं की उलझन में है। तब देखा मैंने कि अब अंत का आदि शुरू हुआ है। गृहयुद्ध अब शुरू नहीं हुआ क्योंकि युद्ध करें तो भी किससे करें? लड़ने की ताकत ही कम हो गई है। कुदरती आपत्तियां हैं—जैसे कि एक समय वहां से चीनी निर्यात (Export) होती थी अब उसकी आयात (Import) करनी पड़ती है।

तब मन में एक प्रश्न उठा ऐसे अंत के समय पर किस प्रकार से ईश्वरीय सेवा की जाए? क्योंकि वर्तमान के सर्व साधन जितना उपयोगी होनी चाहिए वह नहीं हो पाते। लोगों में वैराग्य वृत्ति

उत्पन्न हुई है परंतु उसी का फायदा कैसे लें? वैराग्य वृत्ति को ईश्वरानुभति या ईश्वराभिमुख कैसे करें? साप्ताहिक पाठ्यक्रम, राजयोग-शिविर आदि करना-कराना मुश्किल हो तब हमारे सेवाकेंद्रों में शिक्षा देने के कार्यरत बहन-भाई क्या सिखावें? जब अंत के समय के चिन्ह अपने अब सौम्य और बाद में विकराल स्वरूप दिखावें तब उसी समय जो सेवा करनी चाहिये उसी के तरीके, साधन तथा साधना हमारे पास है? उसकी ट्रेनिंग प्राप्त ऐसी शिक्षक-शिक्षिकाएं हैं?

यह अंत के समय के चिन्ह, परिस्थिति अन्य सर्व देशों में फैलेगी। समस्याएं और प्रश्न दिन-प्रतिदिन जब विकट होंगे तब उसका सामना करने तथा उसमें से मार्ग निकालकर आगे बढ़ने का रास्ता, ईश्वरीय सेवा करने का रास्ता तथा उसी अर्थ साधन हमारे पास हैं?

उस समय पर नये साधन निर्माण करने के लिए उचित समय तथा सामग्री नहीं होगी। उसकी व्यवस्था अब से करनी होगी। नये विशेष साधन तथा उपकरणों का निर्माण अब करना होगा। तभी तो उन साधनों का उसी समय उपयोग हम कर सकेंगे। एक कहावत है–'आग लगे तब कुंआ खोदने जाना'–यह संभव नहीं। पहले से ही कुएं और पानी का बंदोबस्त होना चाहिए। अंत समय उसकी तैयारी करना यह गलत बात है। यह सम्यक अंत के समय के चिन्हों को देखकर हमें भविष्य के वह सब साधन, साधना आदि की पूर्ण तैयारी करनी चाहिए। नहीं तो फिर हमारे और अज्ञानियों के बीच फर्क क्या रहा? वह सब अज्ञान की नींद में हैं और हमें तो सावधानी बहुत समय से मिली है और अब वह सावधानी के आसार स्पष्ट रूप से, सामुदायिक रूप से, वास्तविक रूप से दिखाई पड़ते हैं। तब तो हमें सावधानीपूर्वक व्यवहार वर्तमान में करके आने वाले भविष्य की तैयारी करनी चाहिए। तब तो हम अंत समय को सफल, अपने को संपूर्ण बनाने तथा आने वाली स्वर्ग की सृष्टि लाने के लिये निमित्त बन सकेंगे। दूर का भविष्य अब एक स्थान पर तो वर्तमान हो गया है–क्या हम हमारे पास वह वर्तमान हो जाए उसी का इंतजार करें या पहले से ही उसकी तैयारी करें? □

खानापुर: दीपावली के अवसर पर महिला सम्मेलन में भाग लेती हुई महिलाएं

काठमांडो *में दिपावली के अवसर पर सजाई गई महालक्ष्मी की मूर्ति का उद्घाटन करने के पश्चात् अपने विचार रखती हुई ब्र.कु. राज बहिन।*

"नशा एक बुरी बला"

ब्र.कु. ओम प्रकाश, बांदा

"रूहानी और जिस्मानी डॉक्टर का सुनो यह है कहना,
छोड़ो नशीली चीजें, अगर संसार में, सुख से है रहना।"

मैं दिल्ली में बस में बैठा यात्रा कर रहा था कि मैंने एक बोर्ड देखा उसमें मानव नरकंकाल की डरावनी खोपड़ी बनी थी। लिखा था–

(१) जो स्मैक पिये, ढाई साल जिये।

(२) ढाई अक्षर का मेरा नाम, ढाई साल में कर दूं काम तमाम।।

(३) सिगरेट के प्रत्येक पैकेट के ऊपर लिखा होता है, वैधानिक चेतावनी–सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इन सबके बावजूद आज हम देखते हैं, नशीले पदार्थों की खपत देश में नहीं वरन् सारे संसार में दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। सिर्फ अमेरिका में ही वार्षिक ३,१०,०००,००० (३ अरब १० करोड़) गैलन बीयर का उत्पादन होता है। बुंदेलखंड के एक प्रसिद्ध बीड़ी निर्माता "श्याम बीड़ी वर्क्स" के मालिक ने एक बार मुझे बताया था कि वे अकेले प्रति वर्ष ७०० करोड़ बीड़ियों का उत्पादन करते हैं। जबकि देश भर में ऐसे सैकड़ों उत्पादक हैं। पूरी दुनिया में १००० अरब सिगरेटों का निर्माण प्रति वर्ष होता है। अर्थात् यदि ये सिगरेटें संपूर्ण दुनिया के ५०० करोड़ मनुष्यों में बांटी जाएं तो प्रत्येक को २०० सिगरेटें मिलेंगी। इनकी लम्बाई निकाली जाए तो वे ५ करोड़ मील लम्बी होगी। अर्थात् पृथ्वी से सूर्य तक की जितनी दूरी है उसके आधे तक इन सिगरेटों की डोरी पहुंच जाएगी। इन्हें यदि पृथ्वी में लपेटा जाए तो २००० बार लपेटा जा सकता है और यदि इनमें बीड़ी उत्पादन को जोड़ दिया जाए, तो यह संख्या दुगुनी से अधिक हो जाएगी। यही हाल अन्य नशीले पदार्थों का है जो इनसे भी घातक हैं।

मानव शरीर पर इसका असर–

यदि कोई भी मनुष्य १० सिगरेट प्रतिदिन पीता है तो फेफड़ों के कैंसर से मृत्यु होने की संभावना धूम्रपान न करने वालों की तुलना में १० गुना बढ़ जाती है। इसी प्रकार से यह भी डॉक्टरी जांचों से पता चला कि प्रतिदिन दस सिगरेट पीने वालों की आयु प्रत्येक सिगरेट पीने से १८ मिनट घटती जाती है। अर्थात् यदि कोई व्यक्ति १० सिगरेट पीता है तो नित्य प्रति उसकी आयु १८० मिनट घट जाती है। यदि किसी की अनुमानित आयु ५० वर्ष मानी जाये तो सिगरेट पीने वाले की आयु न सिगरेट पीने वाले की तुलना में ६ वर्ष ३ महीने कम हो जायेगी। अर्थात् वह ५० वर्ष के स्थान पर मात्र पौने ४४ वर्ष ही जियेगा।

तम्बाकू एक बुरी बला–

तम्बाकू के धुंए में करीब ३० प्रकार के विषैले पदार्थ जैसे कि निकोटीन, कार्बन मोनो ऑक्साइड, साइनाइड, कोलतार इत्यादि पाये जाते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो तनाव मुक्त होने के लिये इसका किया गया प्रयोग अंततः घातक होता है। अतः धूम्रपान एक प्रकार से धीमा विषपान ही है जो कैंसर पैदा करने अथवा कैंसर की गति को बढ़ाने में सहायक होता है। ये मनुष्य के होठ, जिह्वा अथवा अन्य मुख के भागों में कैंसर को जन्म दे सकते हैं। नित्य प्रति २० सिगरेटों का सेवन करने वाला व्यक्ति सिगरेट न पीने वालों की तुलना में एक ओर २५ गुना फेफड़ों के कैंसर को निमंत्रण देता है तो दूसरी ओर १० गुना श्वांस के रोगों को। इसी प्रकार से ४ से ६ सिगरेट प्रति घंटे पीने वाले व्यक्ति को अल्सर हो सकता है। और यह आदत गुर्दों को भी खराब कर सकती है। क्या अजीब तमाशा है संसार का छः फुट का आदमी ३ इंच की बीड़ी-सिगरेट का गुलाम हो गया है?

शराब एक बुरी आदत–

इसी प्रकार शराब पीने की आदत भी मनुष्य में इतनी अधिक हो गयी है, जिसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इंग्लैंड, स्कॉटलैंड तथा वेल्स आदि देशों के ९३ प्रतिशत पुरुष तथा ८९ प्रतिशत महिलाएं शराब पीने की आदी हैं। शराब मनुष्य के मस्तिष्क में बुरा असर डालती हैं, साथ ही पेट, आंतों आदि में घाव कर अल्सर नामक व्याधि को जन्म देती है। हृदय रोग के मरीज तो अधिकांश शराब की बुरी लत वाले ही बनते हैं। शराब पीने से स्नायुओं पर भी बुरा असर पड़ता है, इससे अंततः लकवा की शिकायत हो सकती है। शराब पीकर गाड़ी चलाने वाले अक्सर सड़क दुर्घटना कर बैठते हैं। आंकड़ों के अनुसार औद्योगिक घटनाओं में ४७ प्रतिशत शराब पीने वाले लोगों के हाथ पाये गए। हवाई दुर्घटनाओं में ४४ प्रतिशत इन्हीं शराब पीने वालों की बुरी आदत को दोषी पाया गया। शराब के कारण ही ६९ प्रतिशत डूबने की घटनायें होती हैं। तो ६५ प्रतिशत घरेलू मृत्युओं में शराब का ही हाथ पाया गया है।

शराब की बुरी आदत का असर केवल परिवार पर ही नहीं पड़ता वरन् वह संपूर्ण समाज और देश के लिये घोर घातक और अहितकर है।

समय की हानि–

जब मैं स्वयं १९६६-६७ के दौरान राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर का छात्र था, सिगरेट, पान, तम्बाकू खाने का

आदी था। उन्हीं दिनों मैंने समय के साथ प्रयोग किया।एक चार्ट बनाया १५ सें.मी. x १२ सें.मी.। जिसे प्रत्येक दिन के लिये ३०-३१ भागों में खड़े में तथा घंटों के लिए २४ भागों में पड़े में बांटा गया। जीवन के सामान्य कार्यों को १२ रंगों में (पेन्सिल) बांट लिया गया। उदाहरणस्वरूप सोने के समय को दर्शाने के लिए काला, पढ़ने के लिए लाल, मनोरंजन के लिए हरा आदि-आदि। उन दिनों सिगरेट पीना लगभग बंद किया तो पान, तम्बाकू बढ़ गये। इस प्रकार औसतन २४ घंटे में १० पान तो खा ही लेता था। करीब ८ माह समय के साथ प्रयोग किया, पाया कि एक बार के पान खाने मे कम से कम १० मिनट का समय तो खर्च होता ही है। इस प्रकार प्रत्येक दिन मेरे १०० मिनट पान खाने में जा रहे हैं। एक दिन मैंने पूरी अपनी उम्र ७० वर्ष मानते हुए समय का गणित लगाया। यह सोचते कि यदि २० वर्ष की उम्र में यह बुरी आदत सीख ली तो अगले ५० वर्षों में कितना समय इस व्यर्थ की आदत में चला जायेगा। आप जानकर आश्चर्य करेंगे कि इस छोटी-सी बुरी आदत में ही जिंदगी का एक अच्छा खासा समय अर्थात् ३ साल ५ महीने २० दिन चले गये।

यह तो समय का सीधे-सीधे नुकसान है ही, इसके अलावा भी यह बुरी आदत समय ले जाती थी जैसे कि पढ़ते-पढ़ते मन ऊबा तो पान खाने पहुंचे। वहां पान की दुकान में खड़े किसी ने बताया कि फलां टॉकीज में फलां नई फिल्म लगी है, बहुत अच्छी है। अथवा फलां स्थान में फलां-फलां कार्यक्रम होना है अथवा कि फलां-फलां स्थान पर बहुत अच्छा मेला, प्रदर्शनी, तमाशा, सरकस लगा है अथवा कि फलां-फलां मिलने वाले मर गये या कि उनके यहां शादी इत्यादि है। या कि कोई उत्सव है तो ये बातें सुनकर कोई न कोई आगे का कार्यक्रम निर्धारित हो जाता था, जिसका की औसत भी १०० मिनट प्रतिदिन से कम न आयेगा। इस प्रकार और भी समझिए ३ साल ५ महीने २० दिन चले जाते थे।

इस समय के प्रयोग ने मुझे सावधान किया। अपना कैरियर तो सभी बनाना चाहते हैं, तो मैंने भी अच्छा बनने के लिए दृढ़ निश्चय किया और इस बुरी आदत से मुक्ति पायी।

सावधानी–

एक सावधानी की आवश्यकता उन लोगों के लिये अवश्य है जो कि किन्हीं भी बुरी आदतों से छुट्टी चाहते हैं, वह यह कि जो आदत छोड़िए, उसमें कहीं ढील न हो कि उसे हमने थोड़े समय के लिए छोड़ा, किंतु उसके स्थान पर निश्चय यह कीजिए कि जिसे छोड़ा उसे सदैव के लिए छोड़ा [leave it for ever] आदि-आदि। मैं तो अपने दोस्तों से जब वे मेरी इस आदत को छोड़ने पर मजाक उड़ाते, तो कहा करता था, "भइया जी मैं तो इन्हें प्रयोग करने से रहा। हां, आपको इसमें यदि संतोष न हो तो एक काम करना कि जब मैं मर जाऊं तो इन्हें आप मेरी अर्थी के साथ रख देना, शायद वो ही आपको कुछ संतोष दे सकें।" फिर कोई भी मित्र इस प्रकार की बुरी आदत के लिए दुराग्रह नहीं करता था। और धीरे-धीरे उन्हें अभ्यास हो गया, फिर वे पूछते भी नहीं थे और फिर वे नये दूसरे मित्रों को भी बता देते थे कि 'भाई ये सिगरेट, पान, तम्बाकू इत्यादि नहीं लेते हैं।'

आर्थिक नुकसान–

अभी ५ वर्ष पूर्व अचानक मन में आया कि जरा हिसाब लगाकर देखूं कि यदि कोई व्यक्ति केवल मात्र ५ रुपये प्रतिदिन किसी बुरी आदत पर खर्च करता है तो ५० वर्षों में वह अपना कितना आर्थिक नुकसान करेगा। ऐसे सीधे-साधे जोड़ने पर तो यह केवल ९१,२५०/- रुपये होते हैं किंतु यदि इन्हें किसी बैंक आदि में जमाकर दिया जाये तो आपको जानकर बहुत आश्चर्य होगा कि यह ५ रुपये रोज की बचत ५० वर्षों के बाद ८२,५५,१४५/- रुपये (बयासी लाख पचपन हजार एक सौ पैंतालिस रुपये) हो जायेगी। और जो वर्तमान इंदिरा गांधी बांड चला है उसमें यदि ५ रुपये की बचत को जमा करते जाएं तो ५० वर्षों के बाद यही रकम लगभग एक करोड़ दो लाख चालीस हजार रुपये हो जायेगी। इसका सीधा अर्थ हुआ कि यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार की बुरी लत में एक रुपया प्रतिदिन भी खर्च करता है तो वह अपनी जिंदगी में २० लाख रुपये खो देता है।

संस्कारों का निर्माण तथा कर्मों की गहन गति–

सभी जानते हैं कि हम जैसे कर्म करते हैं वैसे ही संस्कार हम (आत्मा) में बनते हैं। आत्मा जैसे कि स्वयं में एक सूक्ष्मतम ज्योति की बिंदी है, उसी प्रकार एक समय में उसका मन किसी एक बिंदू पर ही स्थित होता है और जिस वस्तु, व्यक्ति, स्थान, दृश्य, इन्द्रिय पर उसका ध्यान केंद्रित होता है, आत्मा में उसकी छवि, स्वाद, गंध, स्पर्श, आवाज आदि भी उसी प्रकार अंकित हो जाते हैं। फिर जब किसी क्रिया को बार-बार किया जाता है तो वह आदत में परिवर्तित हो जाता है। यह संस्कार आत्मा रूपी रील में भरते जाते हैं। ये संस्कार मनुष्य में पुनः विचार को जन्म देते हैं और वह फिर उसी क्रिया को करने के लिए प्रेरित करते हैं, ऐसा करते-करते वह आदत के चक्र में फंस जाता है, फिर उससे निकलना उसके लिए अत्यंत दुष्कर कार्य हो जाता है।

यह भी सत्य है कि जो जैसे कर्म करेगा, उसके वैसे ही संस्कार बनेंगे। और जो संस्कार किसी आत्मा में बनते जाते हैं, वही संस्कार उस आत्मा के अगले जन्म के लिए उत्तरदायी होते हैं अथवा नये जन्म के भाग्य का निर्माण करते हैं। उदाहरणस्वरूप यदि किसी आत्मा को सिगरेट, तम्बाकू, शराब या किसी अन्य नशीले पदार्थों को करने की कुटेव है तो उसके संस्कार भी वैसे ही बनते जायेंगे, आत्मा में वैसे ही रिकॉर्डिंग होती जायेगी। हर

आत्मा चाहती तो है कि मेरा जन्म अत्यंत सुख-समृद्धि से भरपूर परिवार, समाज, देश में हो किंतु क्या ऐसा बिना उस प्रकार के संस्कारों के संभव है। कहा जाता है कि–"You will harmonise those, who are alike you." अर्थात् एक ही प्रकृतियों के लोगों में ही आपका सामंजस्य पैदा होता है। प्रश्न उठता है कि क्या कोई आत्मा जो बुरी आदतों के संस्कारों से युक्त है, किसी ऐसे परिवार में जो सुसंस्कारित है, सुखी व सम्पन्न है, में जन्म ले सके? शायद कदापि नहीं। जो जैसे कर्म करता है, वैसे उसके संस्कार बनते जाते हैं, वही संस्कार उसके आगे के जीवनों (जन्मों) की गति को तय करते हैं। वही संस्कार यह तय करते हैं कि उसे कैसे मां, बाप, कैसी सम्पदा, कैसे स्थान, कैसे बातावरण व परिवेश में उसका जन्म हो।

बुरी आदतों से एकाग्रचित्तता नष्ट होती है–

बहुत आसान है यह समझना कि उपरोक्त वर्णित किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों की बुरी आदतें मनुष्य की एकाग्रचित्तता को नष्ट कर देती हैं। व्यक्ति अपने बनाये लक्ष्य को देर से प्राप्त करता है, क्योंकि उसका मूल्यवान बहुत-सा समय इन बुरी व्यर्थ की आदतों के चक्कर में, कि जिनके बिना मनुष्य का जीवन आसानी से बीत सकता है, चला जाता है। उसका चित्त लक्ष्य से हटकर बीच-बीच में अपनी कुटेव में लगा रहता है। इस प्रकार उसका मन बारम्बार अपनी आदतों के कारण नशीले पदार्थों की ओर दौड़ता रहता है। उसका चित्त लक्ष्य से हटकर बारम्बार अपनी आदतों के कारण सन्मार्गच्युत हो जाता है। हालांकि बहुत से लोग स्वयं को न जानने के कारण ऐसा समझते हैं कि इनके प्रयोग से मनुष्य का मन एकाग्रचित्त हो जाता है। कभी मेरी भी ऐसी ही समझ थी किंतु अब तो मैं स्पष्ट रीति से समझ गया हूं कि ये सब आदतें मानव मन की एकाग्रचित्तता को नष्ट करने वाली तथा उसे लक्ष्य से हटाने वाली ही हैं।

मांगने की आदत–

जीवन सादा हो, विचार उच्च हों। खर्च कम करें, चीज ज्यादा चलें। स्वच्छता भी हो। Cleanliness is next to Godliness. ये सीख सर्व आत्माओं के पिता, सर्व के कल्याण-कारी शिवबाबा ने दी है।

बाबा कहते हैं, "मांगने से मरना भला" बाप को पहचाने बिना यदि कोई लौकिक सम्बंध से देवे तो लेना नहीं। ऐसा बाबा बारम्बार कहते–तो जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये हमें समस्त बुरी आदतों से तो मुक्ति पानी ही है अच्छी बातों की धारणाएं करनी ही हैं।

बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, मद्यपान, द्रव्यपान व अन्य नशीले पदार्थों का सेवन ऐसी आदते हैं जिनसे आदमी 'मंगता' भी बन जाता है। जब ऐसे आदत के शिकार व्यक्ति के पास पैसे नहीं होते और नशे की आदत तो उसे मजबूर करती ही है कि उसे पान, तम्बाकू खाने को मिले, सिगरेट पीने को मिले। शराब पीने को वह तड़प उठता है। तो फिर मनुष्य अपनी आदत से मजबूर हो दूसरों से उधार भी मांगने लगता है। और फिर उधार ले-लेकर भी इन ऐबों को करने से वह परहेज नहीं करता। और जब वह समय से कर्ज नहीं दे पाता तो अंततः झूठ बोलने का सहारा लेता है और यही झूठ अंततः मानसिक तनाव को जन्म देता है जो रोगों को भी उभारने का कार्य करते हैं। समाज के अन्य उसकी अपेक्षा सुखी सम्पन्न लोगों को देख-देखकर वह उनके प्रति ईष्यालु भी होता जाता है। धीरे-धीरे उसकी समस्त सम्पत्ति भी स्वाहा हो जाती है और ऐसा चारों दिशाओं से तनावग्रस्त मनुष्य कभी-कभी तो स्थितियों में इतना डूब जाता है कि निराश होकर या तो आत्महत्या के लिए प्रेरित होता है या मर जाता है।

इन बुरी आदतों से मुक्ति कैसे हो?

एक मजेदार कहानी से इस बात को समझा जा सकता है,गांधी जी के परम शिष्य महान् संत विनोबा जी को कौन नहीं जानता? उनके पास एक युवा पहुंचा। उसने कहा, "बाबा! आप महान् हैं, मुझे बीड़ी की इस कुटेव ने बुरी तरह से पकड़ रखा है, कृपया उससे मुक्ति का मार्ग बताइए।" बाबा विनोबा ने कहा, "बच्चे कल आना, मैं तुम्हें उससे मुक्ति की तरकीब बताऊंगा।" दूसरे दिन वह युवक समय से उनके आश्रम में पहुंच गया। उसने कहा, "बाबा मैं आ गया, कृपया मुझे मुक्ति का मार्ग बताएं।" बाबा ने कहा अभी रुको। "देख नहीं रहे हो, ये खम्भा मुझे पकड़े हुए है। जाओ अभी थोड़ी देर बाद आना। तभी तुम्हें तरकीब बताऊंगा।" उस समय विनोबा जी एक खम्भे को पकड़कर खड़े हुये थे। वह युवक बिना उनकी बात समझे वहां से चला गया दो घंटे पश्चात् वह युवक पुनः वहां पहुंचा तो देखा कि बाबा विनोबा उसी प्रकार खड़े हैं। उसने जाते ही फिर सवाल किया तो बाबा जी ने लगभग डांटते हुए कहा, "चुप रह। देख नहीं रहा अभी मुझे खम्भा पकड़े हुए है।"

उस युवक ने जब उनकी बातों की ओर ध्यान दिया और समझा तो कहा, "आप भी बाबा जी, अजीब बात कर रहे हैं, खम्भा आपको पकड़े हुए है कि आप खम्भे को पकड़े हुए हैं।" बाबा विनोबा तो इसी उत्तर की प्रतीक्षा में थे। बोले, "बच्चे बिल्कुल ठीक है। इसी प्रकार से ही तो तुम बीड़ी को पकड़े हुए हो और कह रहे हो कि मुझे बीड़ी ने पकड़ रखा है।" अब यह तो तुम्हारे ही हाथ में है कि तुम उसे छोड़ो तो छूटे। बच्चे,जब तुम ही दृढ़ निश्चय करोगे और उसी बुरी आदत को छोड़ोगे, तभी तो तुम्हें उससे मुक्ति मिलेगी। तो जो भी बुरी आदतें हमारे अंदर हैं, उन्हें हम ही ने कभी न कभी किसी के संग-दोष में आकर अनजाने

शेष पृष्ठ ३१ पर

आप अपना अमूल्य मत किसको देंगे?

□ ले:ब्र.कु. गोदावरी, बंबई

पिछले मास भारत में आम चुनाव हुआ, उस दौरान भिन्न-भिन्न दलों और पार्टियों वाले चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे कि अपना कीमती वोट हमें दो। वे कहते थे हमारी ही पक्ष बड़ा है, बहुत अच्छा कार्य करके दिखायेगा। आप अपना अमूल्य मत हमें ही दीजियेगा। यह भी ऐलान करते थे हम जनता की पूरी सेवा करेंगे, महंगाई हटायेंगे, भ्रष्टाचार मिटायेंगे, एकता का लायेंगे, आपकी सेवा में हाजिर रहेंगे। आप हमें ही मत दीजियेगा। फलाने पक्ष ने क्या किया? और भी समाज को, देश को नीचे गिराया, प्रिय भाइयों और बहनो, अपना अमूल्य मत हमें ही देना। इसी प्रकार के नारे सुनकर के मतदाता को ही निर्णय करना होता है कि किसको मत देना है?

ठीक इसी प्रकार आज आपके सामने नये वर्ष में नये युग का नव-निर्माण करने के लिए अर्थात् आज के दु:खमय संसार को सुखमय संसार बनाने के लिए आपके सामने विभिन्न उम्मीदवार साहस करके आपके सामने खड़े हैं। प्रथम पांच उम्मीदवार इस देह नगरी की महारानी माया की ओर से कष्टदायी नगरी में खड़े हैं और उसके सामने पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए सर्वशक्तिवान् परमपिता शिवबाबा की ओर से पांच श्रेष्ठ गुण अपार शक्तिदायी नगरी में उम्मीदवार बन करके खड़े हैं। अत: आप ही निर्णय कीजिए कि अपना अमूल्य मत किसको देना है?

चुनाव प्रचार का आरंभ

सन ... न ... न.... करती हुई एक जीप आती है और नेता (काम विकार) **कामनाथ** की ओर से समस्या रूपी नारी खड़ी है और उनका लाऊडस्पीकर में एनाउंसमेंट हो रहा है, प्रिय भाइयों और बहनो, वर्तमान समय सारी सृष्टि पर देश-विदेश में हमारे प्रिय और सर्व के लाडले नेता कामनाथ का साम्राज्य फैला हुआ है, जन-जन के हृदय में उनका ही स्थान है। जिन्होंने हजारों साल तपस्या करने वाले ऋषि-मुनि जैसे महान् आत्माओं के सिंहासन को भी हिला दिया है और कलियुग के अंतिम चरण पर अनगिनत आत्माओं के शासन को समाप्त कर स्वयं के आसन को मजबूत कर रहे हैं। ऐसे लोकप्रिय नेता का भाषण लोगों की वृत्ति, दृष्टि, कृति और प्रवृत्ति रूपी गांव-गांव की गलियों में हो रहा है। आप भूलिये मत, भूलिये मत, आप अपना मत कामनाथ को ही दीजिए। जिन्होंने आज तक माया के राजसिंहासन पर बिठाकर ईश्वर पिता के घर से दूर किया है, ज्ञान सागर की लहरों से हटाकर विषय सागर में डुबोया है। हमारा निशान है '**काला मुंह**'। आप काले मुंह पर ही मोहर लगाइये।

दूसरी ओर ज्ञान देव की ओर से प्रकाश खड़ा है।

प्रकाश:– आत्मिक बंधुओं, आज मैं आप सभी देशवासियों को सावधान करने आया हूं, आप सोचिये जहां ज्ञान देव है वहां रोशनी है, अंधकार दूर है।

दीपक हमारा निशान है, मोहर उस पर लगा दो।
ज्ञान देव की शक्ति से काम-विकार को भगा दो।

प्रिय सज्जनो! अपने देश के किसी भी महान् आत्मा जैसे कि त्यागी, तपस्वी राजऋषियों ने, राजयोगियों ने कामनाथ को अपना वोट नहीं दिया और इस चुनाव के दौरान में यही दृढ़ निश्चय किया है कि हमें अपने अंदर के अज्ञान अंधकार को मिटाने के लिए एक नई दुनिया की नई रोशनी लाने के लिए ज्ञान देव के दीपक को ही वोट देना है ताकि घर-घर में रोशनी फैल जाए और हमारा देश फिर से नर्क से स्वर्ग बन जाये। अत: काम-विकार महाशत्रु है। आप 'पवित्र बनो योगी बनो', उसी में ही आपकी विजय है। मोहर लगाइये '**दीपक**' पर विजय पाइये समस्याओं पर।

क्रोध की ओर से ईर्ष्या और द्वेष खड़े हैं मेरे प्रेमी सहयोगियों, आप अपना अमूल्य मत क्रोधाग्नि के सिवाय किसी को मत दीजिए। क्रोध नेता ने ही सभी को लड़ना, झगड़ना, मरना-मारना तथा जहां-तहां हिंसा की आग भड़काने में आपकी मदद की है। आप इसे भूलिये मत। आप किसी की भी परवाह किये बिना किसी से भी लड़ सकते हो। क्रोध के राज्य में कोई भी कानून का बंधन नहीं है। क्रोध के साथी तमोगुणी विचार और प्रकृति के प्रकोप ने आपको पूरा-पूरा साथ दिया है और आगे भी देते रहेंगे। आप भूलिये मत याद रखिये–

हमारा निशान है '**जलती हुई ज्वाला**'
ईर्ष्या द्वेष ने कर दिया सभी को बेताला।
अभी शान्ति की ओर से नम्रता खड़ी है।

नम्रता:–मेरी प्रिय बहनो, सज्जनो और भाइयो, आपको याद आता होगा कि हमारा यही भारत देश सतयुग में कितना संपत्तिवान और समृद्ध था। अन्न-धन के भंडारे भरपूर थे। आप सर्व नर-नारियां दिव्यगुणों से सजी हुई थीं। जिस देश में घी-दूध की नदियां बहती थीं। अटल अखंड निर्विघ्न दैवी स्वराज्य था, क्या आप भूल गये? क्या भूल गया नेता नहीं परंतु देवता थे। आज वही देश क्रोधाग्नि के वशीभूत होकर के शान्ति के राज्य को गंवा दिया है, हम फिर से आपको जागृत करने के लिए आये

हुए हैं। आप डरिये मत, घबराइये मत माया नगरी के दुश्मनों को हटाने के लिए सदा जागृत रहिये और आप हमें ही वोट दीजिए हमारा निशान है **'कल्पवृक्ष'** आइये...आइये... शीतल छाया का अनुभव कीजिए... कीजिए।

लोभ की ओर से आसक्ति खड़ी है।

आसक्ति:—हमारे सर्व साथियो, अपनी निगाह हमारी ओर कीजिए। अपना अमूल्य मत, लोभराज को ही दीजिए जिनकी मदद से आपने आज दिन तक काला धन कमाया, बैंक बैलेंस बढ़ाया, घर बंगला, मोटर गाड़ी बसाया, पाखंड से सभी को हंसाया, अनीति का श्रीखंड खाया। वाह भाई वाह! अपने घर से शान्ति को भगाया। लोभराज की सत्ता के आगे कोई भी ईश्वरीय शान्ति की ताकत नहीं कि आ सके। शान्ति सेकेण्ड में चली जाये और सुख दिल से गायब हो जाये ऐसे आपके कपाट और तिजोरी का रक्षक संग्रह वीर नेता लोभराज को भूलिये मत। अपना कीमती मत दुर्गतिदाता लोभराज को ही दीजिए जिसका निशान है **'बंद ताला और चाबी'**।

सुख की ओर से खुशी खड़ी है:

खुशी:—प्रिय आत्माओ, जागो...जागो और देखो, भौतिक पदार्थों की बुराइयों के पीछे सुख-सागर की खुशी को भूलिये मत। सुख के सागर शिव पिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो चुके हैं, आपकी तकदीर का ताला खोलने के लिए। लोभराज की संग्रह खोरी को छोड़ो और सुख सागर की ओर मन को मोड़ो। हम चेलैंज करते हैं आप सर्व प्रकार के प्राप्तियों के खजानों से भरपूर हो जायेंगे और आपके सर्व दुःख दूर हो जायेंगे।

हमारा वचन कभी खाली नहीं जायेगा
आया है सुख सागर शिव खुशी दिये बिना नहीं जायेगा।

याद रखिये, कामनाथ, क्रोधनाथ और लोभराज के कारण ही आज हमारा देश बेहाल हो गया है। देशवासियों की अंतर वेदना हमारे से सही नहीं जाती है। प्यारे बंधुओं, आप इन सभी विकारों रूपी दुश्मनों के बहकावे में न आकर अपने जीवन को सुख-शान्ति सम्पन्न बनाने के लिए अपना अमूल्य वोट सुखदेव को ही दीजिए जो आपको रोटी, कपड़ा, मकान, दुकान, सुकान, मुस्कान और थकान सभी में मदद करेगा। भूलिये नहीं, भूलिये नहीं। माया के झूले में झूलो नहीं, झूलो नहीं, सुखदेव को ही मत दीजिए। हमारा निशान है **'स्वर्गीय महल'**। मोहर लगाइये स्वर्गीय महल पर।

मोह की ओर से ममता खड़ी है:

ममता:—सुनिये... सुनिये... मेरे प्रिय भाइयो और बहनो, माया की पार्टी जिंदाबाद। हमारी मोहमयी शक्ति को पहचानो और ममतारानी को आगे बढ़ाओ। समता और नम्रता को हमने विषमता में पलट दिया है। मोहराजा हमारे सबके प्रिय नेता हैं। जिन्होंने आज तक सभी नर-नारियों को रूप-रंग, यौवन के विलासी वातावरण में बहुत ही मौज करायी है और अब भी करा रहा है। याद रखिये सुख-शान्ति की बातों में आकर के देश में झूठी क्रांति करना नहीं और मैं और मेरेपन को तोड़ना नहीं। हम गारंटी करते हैं कि हम आपको जल्दी मरने नहीं देंगे और चैन से जीने भी नहीं देंगे। आप जब तक जीवित हैं हमें ही मत देना। याद रखिये मेरे प्रिय चाहको, ग्राहको, हमारा निशान है **'बंदर'**। अपना अमूल्य मत बंदर को ही दीजिए।

सुख-शान्ति का साथ छोड़ दो, क्यों घबराते हो अंदर
भूलो नहीं मोह की जाल को, हमारा निशान है बंदर

प्रेम की ओर से आनंद खड़ा है:

आनंद:-प्रेम नगर की मीठी-मीठी आत्माओं अनेक जन्मों से मोह-माया के पिंजरे में फंसकर व्यर्थ अपने-आपको दुःखी अशान्त और बेचैन बनाया है। आपने अपने आत्मिक स्वरूप को ही भुला दिया है। सुख-शान्ति आपके मन रूपी घर के निजी सदस्य हैं उसे भूलो मत, मोह की दुनिया में डूबो मत। आप ही निर्णय कीजिए हमें अपने देश में 'एकता लाने के लिए एकमत वाला बनना है' या अनेक विकार मतों में आकर के द्वैत मती बनना है। मोह-माया के झूठे जंजाल को छोड़कर प्रेमस्वरूप, प्रेम के सागर, परमात्मा शिव की याद से प्रेमस्वरूप बन जाना है।

पांच विकारों रूपी पंजे ने प्रभु का हाथ छुड़ा दिया
ईर्ष्या, द्वेष, बुरी भावनाओं ने, सत्य का साथ छुड़ा दिया

इसलिए प्रिय बंधुओ, भूलो मत, भूलो मत, याद रखो हम ईश्वरीय प्रेम के अवतार हैं, अविनाशी प्रेम नगर के वासी हैं। हमें लड़ना-झगड़ना नहीं है। एकता की अखंड भावनाओं की सरिता बहानी है। हम सभी एक पिता के पुत्र हैं, हमारा निशान है **'बहती गंगा'**।

देह अभिमान की ओर से परचिंतन खड़ा है:

परचिंतन:—याद रखो दोस्तो, आप अपना वोट देह अभिमान रूपी सांड को ही दीजिए जिसकी ऊंचाई आपको ऊच बना देगी, नीचे झुकने नहीं देगी? आप अपनी स्थूल काया को खूब संभालो, खूब सजाओ, प्यार की बहती गंगा से बचा लो।

अरे मरना है सभी को, मिट्टी से प्यार कर लो
जो मिला जीवन में उनसे तकरार कर लो

प्रिय दोस्तो, भूलो मत आपका एक श्वास भी स्वचिंतन की ओर न जाये, परचिंतन की ओर ही रहे इसके लिए आप हमारे देह अभिमानी सांड की सवारी वाले राजा को ही वोट देना, भूलना नहीं, भूलना नहीं, हमारा निशान है **'खूबसूरत सांड'**। आप अपना अमूल्य मत सांड को ही दीजिए।

देही अभिमानी की ओर से स्वचिंतन खड़ा है:

स्वचिंतन:—हमारे प्रिय आत्मिक बंधुओ—

सांड क्या जाने संगीत का साज
बंदर क्या जाने कोयल की आवाज
समस्या क्या जाने सुख का राज
बंद ताला क्या जाने स्वर्गिक दुनिया का ताज
काला मुंह क्या जाने ईश्वरीय मर्यादा की लाज

इसलिए आत्मिक बंधुओं, आप जागृत हो जाओ, परचिंतन के पर्दे को हटा दो, व्यर्थ संकल्पों को मिटा दो। प्रिय सज्जनो, कहने वाले कह गये बातों के बहाने बह गये इसलिए जो करना है सो कर लो, ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भर लो। हमारे देही अभिमानी राजा का राज्य २५०० वर्ष तक चलेगा, सर्व इंद्रियों के कंट्रोलर इंद्रियजीत राजा आपकी पूरी-पूरी रक्षा करेगा, इसलिए आप अपना अमूल्य मत देही अभिमानी राजा को ही दीजिए, जिसकी निशानी है **'बिंदी'**। आत्मिक बंधुओं, इस बिंदी को वोट देने से आपका लोक, परलोक और स्वर्गलोक तीनों ही सुधर जायेगा। यह बिंदी है आत्मा के स्वरूप की याद दिलाने वाली, परमात्मा के स्वरूप की याद दिलाने वाली ऐसी समर्थ बिंदी को ही अपना अमूल्य मत दीजिएगा और देही अभिमानी राजा को विजय की माला पहनाइये। परचिंतन को छोड़िये, स्वचिंतन की ओर मन लगाइये। विजय है विश्व में आपकी, शिव बिंदु पर वारी जाइये। मत देना किसको दूं, स्वतः निर्णय कीजिए, चुनाव है बड़ा भारी, शिव बिंदु को ही वोट दीजिए। एक तरफ है शिव शक्ति पांडव सेना दूसरी ओर है आसुरी सेना। विचार कीजिए हे मत देने वालों, विजय हमारी किस ओर है? □

भिवंडी *में 'विश्व एकता आध्यात्मिक मेले' के अवसर पर निकाली जा रही शोभा यात्रा का दृश्य।*

जयपुर *संग्रहालय में यू.एन.ओ. दिवस पर शान्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्र.कु. मदनलाल शर्मा जी अपने विचार व्यक्त करते हुए।*

(एक स्मृति)

"बाबा का प्यार"

बी.के. वैभव भाई, छतरपुर (म.प्र.)

हर व्यक्ति के जीवन में कभी-कभी कोई न कोई दिन ऐसा अवश्य आता है जब वह अपनी समस्त खुशियों को एक ही स्थान पर केंद्रित कर लेता है। वह दिन सदा जीवन भर याद रहता है।

मेरे जीवन में भी वह दिन आया जब मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संपर्क में आया और कुछ ही समय पश्चात् मुझे पहली बार ही मधुबन में परमपिता परमात्मा शिवबाबा से मधुर मिलन का शुभ अवसर मिला तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। सच मैं उस दिन कितना खुश था,मेरी आंखों से खुशी के आंसू रुकने का नाम न लेते थे।

अब जब भी परमात्मा शिवबाबा से मिलने की तारीख आती है तो मुझे वह दिन याद आता है और सोचता हूं कि कब फिर से शिवबाबा के पास पहुंचकर बाबा से उस दिन से भी अधिक प्यार पाऊं। वाह प्यारे बाबा वाह! मुझे आपका मिला हुआ वह वरदान आज भी याद है जिसमें आपने मुझे स्वतः ही सब-कुछ दे दिया था, जो आज जीवन में प्रत्यक्ष हो रहा है। वाह प्यार के सागर बाबा मैं आपका वह प्यार कभी नहीं भूलूंगा। सच बाबा आपने हमारा जीवन ही परिवर्तित कर दिया। मीठे बाबा,आपने हमारे ज्ञान का तीसरा नेत्र खोलकर जीवन में कितना रस भर दिया। सचमुच बाबा मैं कितना भाग्यशाली हूं कि मुझे आपसे मिलन मनाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्राणेश्वर शिवबाबा आपके प्यार में मुझे इतना सब-कुछ मिल गया जिसे मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं इतना प्यार इस संसार में किसी से पा सकूंगा। मुझे वह दिन हमेशा याद रहेगा। मीठे बाबा, अब मैं आपका प्यार हर कल्प-कल्प ऐसे ही पाता रहूंगा। प्यारे बाबा आप हमारा हाथ साथ पकड़े रहना।

मेरी जिंदगी में रस भरने वाले प्यारे शिवबाबा... मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि आप मेरी जिंदगी में मेरे परम मित्र बनकर आओगे... आप मुझसे दोस्ती निभाओगे... आप मुझे अपने पुनीत प्यार में समा लोगे। प्राण प्यारे बाबा आपने कैसे मुझे पसंद करके मुझसे दोस्ती कर ली...। मुझे आपकी दोस्ती पर गर्व है... मैं अवश्य ही आपके प्यार का रिटर्न दूंगा... मैं निस्संदेह आपको गौरान्वित करूंगा। आप सदा मेरा साथ निभाते हो मुझे एहसास है। आप छाया की तरह मेरे साथ रहकर शीतलता प्रदान करते हो। मुझे अनुभव है, आप मेरा प्रत्येक संकल्प पूर्ण करते हो, मुझे ज्ञात है। हे मेरे सच्चे मीत... मैं भी आपके सभी संकल्प पूर्ण करूंगा। □

आबू के आंचल में मधुबन मिल गया

□ बी.के. अशोक, तहलटी, आबू रोड

बेचैन मन को चैन मिल गया।
सूखे वन में सुमन खिल गया।।

परमपिता शिव का परिचय अब जाना।
दुःखियों ने पाया खुशियों का खजाना।।

जीवन दाता से नवजीवन मिल गया।
सूखे वन में सुमन खिल गया।।

भटके से दर-दर शान्ति पाने।
शिव आये भू पर स्वर्ग सजाने।।

ज्ञानामृत से मन का मैल धुल गया।
सूखे वन में सुमन खिल गया।।

घर-घर में गूंजी ज्ञान की मुरली।
देश-विदेश से आवाज निकली।।

आबू के आंचल में मधुबन मिल गया।
सूखे वन में सुमन खिल गया।।

आएगा सुखमय नव-संसार

मिले हृदय के जब दो तार, आएगा सुखमय नव-संसार
हिंदू, सिख, मुस्लिम, ईसाई
शिव की हम संतान
ईश्वर की मीठी बगिया में
हम सबकी पहचान

गुंथे किसी के द्वारा हार, आएगा सुखमय नव-संसार
माटी एक तथा माली भी
हम सबका है एक
कुटिया और महल का अन्तर
ले न सुरभि को छेंक

सहें प्रथम कांटों का भार, आएगा सुखमय नव-संसार
'कोई साथ न दे'—इस भय से
नहीं रुकेंगे हस्त
शुभ चिन्तन की शक्ति करेगी
अशुभ सभी के ध्वस्त
बीज वृहद् तरु का आधार, आएगा सुखमय नव-संसार

□ ब्रह्माकुमारी निर्मला, रांची (बिहार)

आलसियों के लिये खुशखबरी

□ बी.के. अशोक, पावन धाम, आबू

एक बार की बात है कि एक राजा अपनी प्रजा की खुश खैरियत पूछने अथवा उनकी गरीबी, अमीरी, रहन-सहन का जायजा लेने अपने राज्य का परिभ्रमण करने के लिये अपने रथ पर बैठकर चला। राजा जब शहर के अनेकों स्थानों से चक्कर लगाकर तथा जनता के हालचाल पूछकर गुजर रहा था तो एक स्थान पर एक व्यक्ति लापरवाही से सड़क पर लेटा राजा को दिखाई दिया। रथ पर बैठा कोचवान बार-बार मार्ग से हटने का उसे इशारा दे रहा था किंतु वह व्यक्ति राजा के आने की परवाह न करते हुए यथावत् निढाल-सा पड़ा रहा। आखिर राजा के सुरक्षाकर्मियों ने उसे मार्ग से उठाकर किनारे किया।

इस बात पर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने उस व्यक्ति के बारे में पूछा कि इसको ऐसी कौन-सी तकलीफ है या यह राजा से अपनी मांग रखना चाहता है। आखिर बात क्या है? यदि इसे कोई शारीरिक रोग हो तो ठीक कर दिया जाये। इतने में एक व्यक्ति आया और उसके विषय में बताने लगा कि महाराज, इसे किसी प्रकार का रोग नहीं है। बस इसमें एक खामी है कि यह व्यक्ति महा आलसी है। इसी कारण यह आपके रथ के सामने से नहीं हट रहा था। यह सुनकर राजा को हैरानी-सी हुई कि मेरे राज्य में आलसी लोग भी हैं। तब मंत्री बोला, महाराज! एक नहीं अनेकों आलसी मनुष्य रहते हैं आपके राज्य में। राजा को ऐसा सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ और उसी वक्त हुकम दिया कि सभी आलसियों को इकट्ठे करो और उनकी परीक्षा ली जावे कि जो सबसे ज्यादा आलसी होगा उसे पुरस्कार दिया जायेगा। बस शाही हुकम की तामील हुई, सारे शहर में ढिंढोरा पिटवाया गया जिससे भारी संख्या में आलसी राजा के पास पहुंच गये। मंत्रियों द्वारा सारे आलसियों को एक ग्राउंड (ground) में एकत्र किया गया जहां चारों ओर घास-फूस रख दिया गया तथा राजा के आदेशानुसार उसको आग लगा दी गयी। आग जैसे उग्र रूप धारण करती गयी वैसे-वैसे आलसी अपने-अपने रास्तों से भागने लगे। जिसमें केवल दो आलसी आग के बिल्कुल पास आने तथा कई स्थानों पर शरीर झुलसने पर भी नहीं उठे और स्थिति उनके जल मरने तक की पहुंच चुकी थी। तब राजा ने आग बुझवाई और सुरक्षाकर्मियों द्वारा उन्हें बाहर निकाला गया तथा उन्हें इनाम देने के लिये राजदरबार में लाया गया। जब राजा उन्हें इनाम देने लगा तो उसमें से एक व्यक्ति आगे बढ़ा और कहने लगा महाराज! इनाम पाने के पात्र यह आलसी नहीं हैं क्योंकि इनसे भी ज्यादा आलसी तो वह दो हैं जिन्हें इनाम दिया जाना चाहिए।

राजा ने जब उस व्यक्ति से पूछा कि वे दो कहां हैं? तब उन्हें बताया गया कि वह तो आलस्य के मारे घर से ही नहीं आये क्योंकि वह कह रहे थे कि कौन जायेगा इतनी दूर स्पर्धा में राजाई के लिये। हम तो घर पर ही ठीक हैं। यह सुनकर राजा दंग रह गया कि ऐसे भी आलसी हैं मेरे राज में कि जो घर से ही नहीं आये और वह भी राजा के हुकम पर। इस आलसी स्वभाव के कारण वे इनाम पाने से भी वंचित रह गये।

हां, तो इस कहानी से हमें भी शिक्षा मिलती है। जबकि आज इस पुरानी पतित दुनिया को पावन बनाने का दिव्य कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा आकर कर रहे हैं। जिसका आधार है साकार प्रजापिता ब्रहमा के कमल मुख द्वारा दिये जाने वाले ईश्वरीय ज्ञान का अनुकरण। और इस अनुकरण का ही सत्य परिणाम है कि आधा कल्प के लिए सुख-शान्ति, आनंद, पवित्रता तथा सर्व प्रकार से सम्पन्न बादशाही मिलती है जो एक जन्म या १००-५० वर्ष की नहीं बल्कि पूरे २५०० वर्ष तथा २१ जन्मों के लिये शिवबाबा दे रहे हैं और राजाई को पाने के लिए खुली घोषणा भी उन्होंने कर दी है।

अतः वह हमें इस बादशाही पाने के योग्य बनाने के लिए पढ़ाने भी आते हैं और वह भी कोई नजदीक के गांव से नहीं बल्कि परमधाम से। इसलिए मैं ईश्वरीय संदेश वाहक के रूप में आपको यह अवगत करा रहा हूं कि स्वयं परमात्मा शिव द्वारा दिये गये ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग के अभ्यास को न भूलें। और यह भी याद रहे कि सिर्फ ईश्वर का नाम लेना मात्र ही सब-कुछ नहीं है बल्कि उसके बताये रास्ते पर चलना महत्वपूर्ण है। इसलिए जिस प्रकार हम खाने-पीने, कपड़े पहनने आदि में आलस्य नहीं करते उसी प्रकार ईश्वरीय श्रीमत् का पालन करना भी हम सबका प्रथम कर्त्तव्य बन जाता है। याद रहे बीता हुआ समय वापस नहीं आता। अतः आलस्य के मारे समय बहुत है, फिर कभी कर लेंगे कहकर चादर तान सोने से २१ जन्मों की बादशाही से वंचित रह जाओगे। सावधान,अब नहीं तो कभी नहीं। □

सूचना

ऐसा मालूम हुआ है कि बहुत से सेवाकेंद्रों पर श्रीमति डॉ. सरिता शुभनीश के नाम से तथा 'कला प्रकाशन' की ओर से पत्र भेजे गए हैं जिनमें कहा गया है कि 'स्वर्ण-युग' नाम से शोध प्रबंध अर्थात् पुस्तक छपाई जा रही है। आपको सूचित किया जाता है कि इस प्रकाशक की या प्रकाशन की ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से कोई सम्बंध नहीं है न ही ब्रह्मा-कुमारी ई.वि. विद्यालय के प्रकाशन विभाग से सम्बंध है।

—व्यवस्थापक

विषय विकारों की दुर्गंध

बी.के. रत्ना, शाहबाद (कर्नाटक)

एक गांव में एक राजा रहता था। साधु-महात्माओं में उसकी श्रद्धा थी। एक महात्मा जी की कुटीर पर वह प्रतिदिन जाया करता था। उन्होंने एक बार महात्मा जी को अपने महल में पधारने के लिए कहा। महात्मा जी ने यह कहकर टाल दिया कि, "मुझे तुम्हारे महल में दुर्गंध आती है।" राजा ने मन में सोचा कि महल में तो दुर्गंध नहीं होती है बल्कि यत्र, तत्र, इत्र, फुलेल छिड़का रहता है। पता नहीं, महात्मा जी को कैसे दुर्गंध आती है? राजा ने श्रद्धालु होने कारण संकोच से कुछ नहीं कहा। एक दिन महात्मा जी राजा को साथ लेकर घूमने निकले। घूमते-घूमते वे चमारों की बस्ती में आ गये। दूर एक झाड़ के नीचे खड़े हो गये। चमारों के घरों में कहीं चमड़ा सूख रहा था तो कहीं ताजा चमड़ा तैयार किया जा रहा था। हर घर में चमड़ा था। चमड़े की बड़ी दुर्गंध आ रही थी। हवा का झोंका भी उनकी तरफ ही बह रहा था। दुर्गंध के मारे राजा परेशान हो रहा था। राजा ने महात्मा जी से कहा–"भगवन्! मैं यहां एक पलभर के लिए भी नहीं खड़ा हो सकता। जल्दी कीजिए और चलिए।" महात्मा जी बोले–"तुमको दुर्गंध आ रही है? देखो तो चमारों के घर में कितने पुरुष-स्त्रियां, बाल-बच्चे हैं। कोई काम कर रहा है, कोई खा-पी रहा है, कोई हंस-खेल रहा है। इन किसी को भी दुर्गंध नहीं आ रही है, फिर तुमको कैसे दुर्गंध आ रही है?" राजा ने कहा–"भगवन्! चमड़े के साथ रहते-रहते इन्हें अभ्यास हो गया है। इनकी नाक भी ऐसी हो गयी है कि इन्हें चमड़े की दुर्गंध नहीं आ रही है! मुझे तो इस चमड़े की दुर्गंध का अभ्यास नहीं है, कृपया जल्दी कीजिए अब तो मुझसे एक क्षण भी ठहरा नहीं जायेगा।" महात्मा जी ने हंसकर कहा–"भाई यही हाल तुम्हारे राजमहल का भी है। विषय भोग में रहते-रहते, तुम उसके अभ्यासी हो गये हो। तुम्हें उसकी दुर्गंध नहीं आती। मुझे तो विषय विकारों से दुर्गंध आती है। इसीलिए तुम्हारा निमंत्रण मैंने अस्वीकार कर दिया था।"

वर्तमान समय मनुष्य देह-अभिमान में आकर विषय विकारों को अपना स्वरूप समझकर बैठा है। इसीलिए उसे विषय विकारों की दुर्गंध नहीं आ रही है। शिवबाबा ने हमें समझाया है कि, हरेक मनुष्य के अंदर चैतन्य शक्ति ज्योर्तिबिंदु आत्मा विराजमान है। आत्मा को स्थूल आखों से देखा नहीं जाता। आत्मा देह से न्यारी है। आत्मा का मूल गुण पवित्रता है। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। दैहिक भोग का सुख निम्न स्तर का है। देह से न्यारी आत्मा की अनुभूति एक दिव्य, अलौकिक आनंद की महसूसता कराती है। देहरूपी चमड़ी को ही स्वयंम् का निजी स्वरूप समझकर वह उसी का आदि हो गया है। शिवबाबा आकर हमें हमारे सच्चे स्वरूप की याद दिला रहे हैं। अपने को आत्मा समझकर चलेंगे तो विषय विकारों की दुर्गंध को पहचानेंगे। उसे हम पलभर के लिए भी स्वीकार नहीं करेंगे।

सुगंध मन को प्रसन्न करती है। दुर्गंध मन को मलिन बनाती है। सुगंध बुद्धि को सही रास्ते पर ले जाती है। दुर्गंध बुद्धि को गलत रास्ते पर ले जाती है। इसका असर संस्कार पर होता है। दुर्गंध के सहवास में रहते-रहते वही संस्कार उस पर हो जाते हैं। आत्मा की शक्तियां हैं–मन, बुद्धि, संस्कार। शिवबाबा के महावाक्य अनुसार मन, बुद्धि और संस्कार को दुर्गंध से बचाना है। इससे छूटना ही महान् बनना है।

□ □ □

कलकत्ता: राजयोग भवन, बांगर एवीन्यु में स्वागत दृश्य। ब्र० कु० कानन ब्र० कु० दादी जानकी, ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता तथा ब्र० कु० निर्मला चित्र में बाबा की याद में खड़े हैं।

सोवियत संघ में आध्यात्मिक सेवा का एक प्रवाह

ब्रह्माकुमारी बहन चक्रधारी और ब्रह्माकुमारी बहन किरण, सितंबर ५, १९८९ को मॉस्को पहुंचे। किरण बहन लंदन होते हुए वापिस भारत लौटीं, लेकिन चक्रधारी बहन बाबा के उपकरण (Instrument) के रूप में अभी वहीं ठहरी हुई हैं। वहां देहली से गए हुए भ्राता विजय जी भी बाबा के कार्य में आदि-निमित्त हैं तथा बहुत ही सहयोगी हैं। वे दिल्ली में पी.एच.डी. करने के बाद और आगे शोधकार्य करने के लिए गए हुए हैं। सेवाकार्य प्रारंभ करने के बाद देखा गया कि वहां योग के प्रति अधिक रुचि है। विभिन्न संस्थानों में राजयोग के विषय में भाषण तथा पाठ्यक्रम (Course) रखे गये। शुरू में तो दोनों बहनों को निमंत्रण वहां के 'नये स्वास्थ्य साधनों की समिति' से और स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से मिला था। १९ से २१ अक्टूबर तक होने वाले 'योग और स्वास्थ्य' से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जयंती बहन को भी आमंत्रित किया गया और जयंती बहन ३० नवंबर तक मॉस्को में रुकीं और वहां उन्होंने भी कुछेक स्थानों पर भाषण किये तथा कुछ योग-शिविर भी करवाए।

शोध और विकास कम्पनी (Research and Development Company) जो कि स्वास्थ्य के नये साधनों (Non Traditional Therapies for Health) के क्षेत्र में रुचि रखते हैं, के सहयोग से अभी वहां छोटा-सा स्थान बनाया गया है। संभव है थोड़े समय में अधिकारीय तौर पर एक सेवाकेंद्र वहां स्थापित किया जायेगा। काफी मात्रा में आत्माओं ने सुबह के समय बाबा के घर आना शुरू किया है। कई बार दिन में तीन क्लास भी करानी होती हैं। दिपावली को न केवल एक उत्सव के रूप में मनाया गया बल्कि बाबा के नये बच्चों के जन्मदिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें सुबह भोग के समय २५ आत्माएं पहुंचीं।

रूस में एक शरीरधारी आत्मा, जिसने कि सितंबर मास में यात्रा के दौरान ज्ञान लिया और जिसका नाम लारिसा है, ने अपने घर पर्म (Perm) में सेवा का कार्य शुरू किया है। रेल द्वारा मॉस्को से पर्म का १९ घंटे का रास्ता है। ये बहन १२ दिन तक अनुवाद के लिए मॉस्को में थीं। इन दिनों कैटी बहन अनुवादक के रूप में चक्रधारी बहन के साथ हैं। यह बहन हंगरी देश में रहती थी परंतु इसकें संबंधी रूस में हैं।

बहन इरिना जिन्होंने जुलाई मास में मॉस्को में ज्ञान लिया, ने विजय भाई और माइक भाई को लेनिनग्राद में भाषण के लिए आमंत्रित किया, वे बाबा के ज्ञान, शक्ति और स्नेह का पान करने अर्थ एक मास के लिए लंदन में थीं। सेवा की प्रेरणा से प्रेरित हो वे मॉस्को पहुंचीं।

सोवियत संघ के लोगों को टी.वी. और रेडियो में एक भेंटवार्ता के द्वारा सूचित किया गया कि वे बेहतर विश्व के बारे में अपनी संकल्पनाएं (Visions) सोवियत पीस कमेटी को भेजें। International Broadcast द्वारा विश्व के सभी देशों में हिंदी और अंग्रेजी में हुए भेंटवार्ता को प्रसारित किया गया।

हाउस ऑफ कल्चर में हुए दो भाषणों में ४०० से भी अधिक लोगों ने भाग लिया, जिनमें से लगभग २०० वे आत्माएं हैं जो कि विभिन्न पांच सत्रों में योग का प्रशिक्षण ले रही हैं, और एक अन्य ग्रुप ने भी पाठ्यक्रम (Course) शुरू किया है।

एक अन्य मीटिंग सोवियत एकेडमी ऑफ साइंस के उपप्रधान वेलिकोव के साथ भी रखी गई। उन्होंने 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना के प्रति अपनी विशेष रुचि दिखाई और आगे के लिए भी सहयोगी रहेंगे। उन्होंने जनवरी में होने वाली एक उच्चस्तरीय सम्मेलन में जयंती बहन को निमंत्रण भी दिया है।

रशिया के मनोवैज्ञानिक संघ के अध्यक्ष बाबा के घर आये, इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ डॉयलाग के कार्यकारी निदेशक, जिनका नाम सेन्युशकिन है, भी बाबा के सेवा-स्थान पर आये थे।

बाबा के लिए उनके दिल और द्वार पूर्ण रूप से खुले हैं, रूस देश के सभी कोनों से लगातार भाषण के लिए निमंत्रण मिल रहे हैं। ऐसा देखने में आता है जैसे कि बाबा प्यासी आत्माओं को भरपूर करना चाहते हैं और उन्हें, उनका भाग्य निश्चित करने का एक अवसर जल्दी ही प्रदान करना चाहते हैं।

जिन स्थानों पर भाषण हुए हैं, उनमें से कुछ एक के नाम ये हैं:–

- Centre for Non-Traditional Medicine, Committee for Sports.
- Institute of Physics and Technology of USSR Academy of Sciences, Moscow.
- Institute of Physical Sciences of USSR Academy

of Sciences, Moscow.

- Institute of Psychology of USSR Academy of Sciences, Moscow.
- Institute of Psychotherapy and Institute of Oceanology of USSR Academy of Sciences, Moscow.
- Society of Scientists.
- Institute of Aviation—Leningrad.
- Institute of Neurology Polyclinic Hospital.
- Health Centre Aktyaberskya Polye, lecture, 5 days meditation course.
- Philosophical Society.
- Homoeopathic Polyclinic.
- Institute of Physical Centre.
- Global Co-operation was presented at school of Vocational Studies.
- Government Modern School—"Litsay."

वर्तमान समय १२-१२ आत्माओं के समूह के लिये योग-अभ्यास के ४ प्रशिक्षण चल रहे हैं।

निम्नलिखित पत्रों-पत्रिकाओं या रेडियो, टी.वी. ने साक्षात्कार (Interview) किया और भेंटवार्ता छापी या प्रसारित की—

- Journal of Science and Religion.
- Moscow Radio—3 times.
- Evening Moscow—National Television.
- Evening Youth—National Television.
- Journal of Culture.
- Moscow Daily Komsomolskaya and Pravda.
- Monthly Journal "Tomorrow".
- Monthly Journal "Phenomenon."

अभी कुछ ही दिन पूर्व जब मॉस्को टी.वी. पर और रेडियो में प्रोग्राम आया तो लोग आ-आकर बताने लगे कि आपका प्रोग्राम आया है।

निम्नलिखित सम्मेलन जिनमें उपस्थित हुए—

- मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी में 'योग, स्वास्थ्य और संपूर्णता' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
- याल्ता यूकराइन (Yalta Ukraine) में 'योग और स्वास्थ्य' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन।
- राम-कृष्ण परमहंस के 'संपूर्ण-योग-विधि' विषय पर सम्मेलन।

सेवाएं जो कि लेनिनग्राद में हुईं—

- योग अभ्यास का प्रशिक्षण, हाल ऑफ पीस कल्चर में।
- एक क्लब में 'योग और स्वास्थ्य' विषय पर भाषण।

भ्राता ब्रह्माकुमार जगदीश जी के मॉस्को पहुंचने पर

१६ से २० नवंबर, १९८९ के बीच जगदीश भाई जी मॉस्को पहुंचे। उनके वहां पहुंचने पर क्लीनिक ऑफ न्यूरोसिस (Clinic of Neurosis) में एक भाषण आयोजित किया गया, जिसमें ५० डॉक्टर्स उपस्थित थे। वहां के व्यवस्थापक ने भाषण का अनुसरण करते हुए अपने स्टाफ के लिये योग की कक्षाएं कराने का निमंत्रण पेश किया। सोवियत पीस कमेटी में 'मानवीय मूल्यों' और 'सर्व के सहयोग' विषय पर भाषण का आयोजन किया गया। मॉस्को के विभिन्न समाचार-पत्रों के पत्रकार और संवाददाता भाषण के इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

एक सार्वजनिक कार्यक्रम हाउस ऑफ कल्चर (House of Culture) में आयोजित हुआ। जहां भ्राता जी ने आत्मा, परमात्मा और राजयोग के आधार और सिद्धांत के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया।

स्वास्थ्य मंत्रालय, विज्ञान और तकनीकी विभाग के उपाध्यक्ष प्रो. वाल्दमीर इल्लिन (Vice Head of the Department of Science & Technology) के साथ व्यक्तिगत मुलाकात भी की गई। बेलगाम में होने जा रहे अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य सम्मेलन में भाग लेने के लिये इन्होंने अपनी रुचि दिखाई। साथ ही, माऊंट आबू आने का वायदा किया। दो भेंटवार्ताएं मॉस्को रेडियो और अंतर्राष्ट्रीय रेडियो, सोवियत संघ द्वारा प्रसारित किये गये।

भ्राता जगदीश जी ने जो कक्षाएं कराईं उनसे नियमित लाभ लेने वाले विद्यार्थी और कुछ अन्यों के नयन सजल हो उठे, जब भ्राता जी वहां से भारत के लिए छुट्टी ले रहे थे। पुराने विद्यार्थियों के लिये हर रोज तीन कक्षाएं चलती हैं, जिनकी संख्या लगभग ७० है। प्रत्येक दिन नये आने वालों के लिए १ घंटा राजयोग शिविर चलता है। Mr. E. Sensushkin, Dy. Director General of the Association के सौजन्य से यह निमंत्रण International Dialogue Association, Moscow, Los Angels की ओर से जगदीश भाई जी को प्रदान किया गया था। □

सिनेमा देखने में क्या बुराई है?

आज सिनेमा (चलचित्र) देखना बहुत लोकप्रिय हो गया है। बच्चे-बूढ़े सभी सिनेमा देखने के शौकीन बन गए हैं अब तो सिनेमा टी.वी. के द्वारा घर-घर में पहुंच गया है। दिन हो या रात, सिनेमाघर भरे ही रहते हैं और लोग टी.वी. पर बैठे ही रहते हैं। वी.सी.आर. के प्रचार से तो फिल्में देखना एक आदत बनती जा रही है। जो लोग ईश्वरीय ज्ञान सुनने के लिए घर के कम-काज अथवा बच्चों की देखभाल इत्यादि के कारण फुरसत न मिलने की मजबूरी जाहिर करते हैं, सिनेमा देखने के लिए तो उनके पास भी समय निकल ही आता है। सच है कि जहां चाह है, वहां राह भी अवश्य ही है। देश में ऐसे शरीफ घराने तो अब भी हैं जिनमें मांस-मदिरा, सिगरेट इत्यादि से परहेज किया जाता है, परंतु आज शायद ही ऐसा कोई भला परिवार बचा होगा जिसमें सिनेमा देखना, बुरी बात समझी जाती हो। ऐसी परिस्थिति में जबकि अधिकांश बुद्धिजीवी मनुष्य सिनेमा देखते हैं, इसकी बुराइयों की चर्चा को 'दकिया नूसी विचार' कहकर उड़ा देने का प्रयत्न किया जाता है। प्रायः मनुष्य इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करने से पहले ही इस प्रकार कहने लगते हैं कि-'अजी! अब आप चाहे कितने भी प्रयत्न कर लें, न तो फिल्मों का बनना बंद हो सकता है और न देखना ही, इसलिए यह सारी बहस ही फालतू है' अथवा 'आप तो चाहते हैं कि कोई सिनेमा देखे ही नहीं। भला यह कैसे हो सकता है?' इत्यादि। कुछ लोग तो उल्टे ही सिनेमा के लाभ गिनवाने लगते हैं कि यह संस्कृति, भावनात्मक एकता, राष्ट्रीयता, आधुनिक विचारों एवं रहन-सहन के ढंग, शिक्षा इत्यादि के सार्वजनिक प्रचार का प्रभावशाली माध्यम तथा जन-साधारण के सामूहिक मनोरंजन का सस्ता साधन है जिसके द्वारा हजारों लोगों का रोजगार तथा व्यवसाय चलता है और सरकार को भी करों के द्वारा अच्छी खासी आमदनी होती है। कई व्यक्ति सिनेमा के विरोध को एक उपयोगी वैज्ञानिक आविष्कार का विरोध मानते हुए तर्क करते हैं कि यदि अच्छी फिल्में दिखाई जावें तो क्या सिनेमा जनजीवन को ऊंचा उठाने का एक आदर्श माध्यम नहीं सिद्ध हो सकता? अन्य कई यह दलील पेश करते हैं कि आखिर सभी फिल्में तो खराब नहीं होती? कुछ एक का तो ऐसा भी विचार है कि हर फिल्म में कोई न कोई अच्छी बात जरूर होती है और दर्शक को चाहिये कि वह दत्तात्रेय की न्याईं गुणग्राहक बनकर अच्छी और शिक्षाप्रद बातें ही सिनेमा से ग्रहण करे। सिनेमा के पक्ष में इस तरह की अनेक बातों से स्पष्ट है कि आज के समाज में सिनेमा देखने को मनोरंजन का एक निर्दोष साधन समझकर स्वीकार किया जा चुका है और लोगों को इसमें कोई बुराई नजर नहीं आती। परंतु क्या सचमुच ऐसा ही है।

सत्य तो यह है कि जो लोग स्वयं सिनेमा देखने की आदत में फंसे हुए हैं, वे कभी भी इसकी बुराइयों के बारे में पूर्णतया निष्पक्ष होकर सोच-विचार नहीं कर सकते। उनकी सभी दलीलें थोथी ही हैं। उदाहरणार्थ कई लोग कहते हैं कि वे तो केवल 'अच्छी फिल्में' ही देखते हैं। परंतु यह एक झूठी तसल्ली है। एक तो फिल्म के अच्छी होने या न होने का पता उसको देख लेने के बाद ही चलता है और कोई व्यक्ति टिकट खरीद लेने के बाद फिल्म को इसलिए अधूरी देखकर नहीं छोड़ देता कि उसमें कुछ भद्दे अथवा अश्लील दृश्य आने लगे थे। धीरे-धीरे तो वह इनको स्वीकार ही कर लेता है। दूसरे, आजकल तो सभी, यहां तक कि धार्मिक फिल्मों में भी अंग-प्रदर्शन एवं अर्ध-नग्नता से भरपूर नाच-गानों का मिर्च-मसाला होता ही है क्योंकि इसके बिना तो फिल्म असफल रहती है और उसके निर्माता को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इसी प्रकार, कुछ लोग समझते हैं कि वे तो इतने परिपक्व एवं सुलझे हुए मस्तिष्क के स्वामी हैं कि उन पर फिल्मों के गंदे और निर्लज्ज दृश्यों का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता। ऐसा समझना भी स्वयं को धोखा देना ही है। इसमें संदेह नहीं कि युवा वर्ग पर सिनेमा का दुष्प्रभाव जल्दी और अधिक गहरा पड़ता है, परंतु इससे अछूता तो कोई भी नहीं रह सकता। जैसे शारीरिक भोजन की तासीर का प्रभाव पड़ना अनिवार्य है वैसे ही आंखों और कानों द्वारा दिये गये सिनेमा रूपी भोजन का अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक ही है। किसी ने ठीक ही कहा है कि-'काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय, एक लीक काजल की लागी है पे लागी है'। फिर, स्वयं सिनेमा देखने वाले बड़े बुजुर्ग अपने बच्चों को भला कैसे इस बुरी आदत से रोक सकते हैं और जब एक बार बच्चों को यह लत पड़ जाये तो उनको खराब फिल्में देखने से रोकना बहुत कठिन हो जाता है। जिन भले घरों में अब भी बहू-बेटियों के होटलों और क्लबों में जाकर अश्लील नृत्य इत्यादि देखने को बुरी बात समझी जाती है वे किस मुंह से उन्हें फिल्मों में वैसे ही निर्लज्ज दृश्य देखने की अनुमति दे देते हैं? देखा जाये तो सिनेमा के पक्ष में व्यर्थ के तर्क करना बुराई में फंसे होने पर भी स्वयं को अच्छा समझने और जतलाने की व्यर्थ चेष्टा करना है जिसे दम्भ (Hypocrisy) ही कहेंगे। इसलिए सिनेमा की बुराइयों को अच्छी तरह जानकर उन्हें मन से स्वीकार करना जरूरी है।

सिनेमा एक मीठा जहर है

सच पूछें तो सिनेमा 'सिन' (Sin) अर्थात् पाप की 'मां'

(Mother) है। यह एक ऐसा मीठा जहर है जो हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में फैलकर अति घातक सिद्ध हो रहा है। चरित्र और मर्यादा का सत्यानाश करने में जितना हाथ सिनेमा का है उतना शायद ही किसी अन्य दुर्व्यसन का होगा। आज मनुष्यों के बोलचाल, वेशभूषा और रहन-सहन पर सिनेमा की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। सिनेमा के द्वारा मनुष्यों की कामवासना को उकसाकर समाज में दुराचार और व्यभिचार का विष फैल रहा है जिससे वे रही-सही मर्यादाओं का भी उल्लंघन करके अपनी प्राचीन उज्ज्वल संस्कृति को कलंकित कर रहे हैं। इतना ही नहीं बल्कि जैसे शराब, अफीम इत्यादि का नशा करने वालों को समय गुजरने के साथ-साथ इनके सेवन की मात्रा में वृद्धि करनी पड़ती है, उसी रीति सिनेमा में बुराई की मात्रा भी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है और यह विष और अधिक विषैला होता जा रहा है। सिनेमा ही 'निर्लज्ज समाज' (Permissive Society) की जननी है। जो बातें कुछ समय पूर्व खराब समझी जाती थीं, आज मनुष्य उनके प्रति लापरवाही बरतने लगे हैं अथवा उनको स्वीकृति देने लगे हैं। देश में जब फिल्में बननी शुरू हुई थीं तो कोई भी शरीफ घराने की महिला फिल्म अभिनेत्री बनने को तैयार न थी क्योंकि हर प्रकार के दर्शकों के सामने अपने नाच-गाने की तस्वीरों के प्रदर्शन करने को बड़ी बेशर्मी की बात समझा जाता था। इसलिए शुरू की फिल्मों में नारियों का अभिनय भी पुरुषों को करना पड़ता था। परंतु आज तो पासा ही पलट गया है और अच्छे-अच्छे घरानों की महिलाएं भी फिल्म अभिनेत्री बनने को तैयार हैं बल्कि वे इसे अपने लिए एक बड़े ही सौभाग्य की बात समझती हैं। आज प्रायः सभी नव-युवतियां और नवयुवक सिनेमा में काम करने के स्वप्न देखते हैं। वे और नहीं तो कम से कम अपने वेशभूषा और चाल-ढाल को सिनेमा-एक्टरों जैसा बनाने का पूरा प्रयत्न करते हैं। उनके माता, पिता और शिक्षक भी उन्हें ऐसा करने से नहीं रोकते क्योंकि वे तो स्वयं भी इसमें कोई बुराई नहीं समझते। कई मां-बाप तो अपने बच्चों को खासतौर पर संगीत और नृत्य की शिक्षा दिलवाते हैं ताकि वे फिल्म-स्टार न सही तो कम-से-कम स्टेज-स्टार तो बन ही जायें। इस प्रकार के अनेक परिवर्तन हमारे समाज के शिक्षित वर्ग के दृष्टिकोण में आते जा रहे हैं जिनको 'आधुनिक विचार' अथवा 'जमाने की रफ्तार के साथ चलना' कहकर उचित सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है परंतु इस कटुसत्य से भी कोई इंकार नहीं कर सकता कि सिनेमा ने हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की पवित्रता की धज्जियाँ उड़ा कर रख दी हैं। समाज में बढ़ते हुए फैशन, निर्लज्जता, अंग-प्रदर्शन को प्रोत्साहन देकर मनुष्यों को धर्म-भ्रष्ट और कर्म-भ्रष्ट करके भोगी, विलासी और विकारी जीवन की ओर प्रवृत्त करने का सबसे बड़ा दोषी यदि सिनेमा नहीं तो और कौन है? आज नगर-नगर के छोटे-छोटे होटलों में भी जो 'कैबरे-नृत्य' (Cabaret Dance) होने लगे हैं, उनके पीछे भी सिनेमा का ही हाथ है क्योंकि फिल्मों में निरंतर ऐसे नृत्य देखते रहने से ही लोग इस बीमारी के शिकार हुए हैं। इन गंदे नृत्यों के द्वारा समाज में कितना विष फैल रहा है उसका अनुमान आप स्वयं ही लगा सकते हैं! लोग सिनेमा के गीतों के भी बेहद रसिया हो गए हैं। कोई राजनैतिक सभा हो या समाज सम्मेलन, दफ्तर का जलसा हो या दवाखाने का उद्घाटन, वक्त हो या बे-वक्त मनुष्यों को हर समय फिल्मी गीत सुनने को मिलने चाहियें। सुबह सबेरे पौ फटने से लेकर देर रात्रि तक रेडियो से फिल्मी गीतों का प्रसारण होता ही रहता है। विचार करें कि यह बात हमारे समाज के विद्यार्थी वर्ग अथवा छात्र-छात्राओं के लिए कितनी घातक सिद्ध हो रही है। मनुष्यों में बढ़ती हुई वासना, कुदृष्टि एवं दुराचार का मुख्य कारण भी सिनेमा के द्वारा उनकी पाशविक वृत्तियों का भड़काया जाना ही है। सिनेमा से कामवृत्ति उत्तेजित होती है जिससे जनसंख्या विस्फोट की समस्या और जटिल बनती जा रही है। देखा जाये तो मनुष्यों में हिंसात्मक वृत्ति, अराजकता, अवहेलना, घृणा इत्यादि की भावनाओं को जागृत करने में भी बहुत हद तक सिनेमा ही जिम्मेवार है।

सिनेमा के द्वारा बुराई फैलने के कारण

कई लोग सिनेमा को अच्छाई और बुराई का मिश्रण समझने की भूल कर देते हैं। वे सोचते हैं कि सिनेमा के द्वारा जैसे समाज में कुछ बुराइयां आ गई हैं वैसे ही कुछ अच्छाइयां भी तो फैली ही होंगी। काश! कि ऐसा ही होता!! वस्तुतः सिनेमा के द्वारा केवल बुराई ही फैलती है। इस सत्यता के कारण बहुत सूक्ष्म हैं जिनको अच्छी तरह समझ लेना जरूरी है।

सिनेमा एक उद्योग है न कि चरित्र-निर्माण का संस्थान

फिल्मों का बनाना, वितरण और प्रदर्शन एक बहुत बड़ा उद्योग है जिसमें लाखों करोड़ों रुपयों के वारे-न्यारे होते हैं। इस धंधे में कई व्यक्तियों को तो अपने परिश्रम से कहीं अधिक धन प्राप्त होता है। उनके लिए यह धनोपार्जन का एक सुलभ साधन है। फिल्मों का निर्माण धन कमाने के लोभ से ही किया जाता है न कि समाज सुधार के लक्ष्य से। फिल्म बनाने वालों को इस बात से कोई सरोकार नहीं होता कि उनकी फिल्म से लोगों के चरित्र पर क्या असर पड़ेगा या उससे समाज को क्या हानि और लाभ होगा! उन्हें तो अपने ही आर्थिक हानि-लाभ की चिंता होती है। अतः फिल्मों के निर्माण के पीछे मूल प्रवृत्ति 'लोभ-विकार' की ही है। अधिक कमाई के प्रलोभन से ही हर नई फिल्म में पहले से अधिक निर्लज्जता का प्रदर्शन किया जा रहा है। सत्य तो यह है कि फिल्मों में जो थोड़े-बहुत अच्छे और शिक्षाप्रद संवाद होते हैं, वे

केवल इसमें भरी हुई अश्लील बातों पर लीपा-पोती करने अथवा 'सेंसर-बोर्ड' का मुंह बंद करने के लिए ही होते हैं। आज के सेंसर वालों में इतनी हिम्मत ही कहां है कि लाखों रुपयों की लागत से बनी हुई फिल्मों को इसलिए अस्वीकार कर दें कि उनमें शुरू से अंत तक बेशर्मी का प्रदर्शन किया गया है। सेंसर की इस कमजोरी को फिल्म निर्माता भी अच्छी तरह जानते हैं।

फिल्मी कहानियां

जैसे कहते हैं कि किसी कुत्ते के मनुष्य को काटने से अखबार में छपने योग्य समाचार नहीं बनता किंतु यदि कोई मनुष्य कुत्ते को काट ले तो वह खबर बन जाती है, वैसे ही फिल्मी कहानियां भी सीधे-सादे और स्वच्छ व्यवहारिक जीवन से नहीं बनतीं। बल्कि सामान्य जीवन की बातों का खूब तोड़-मरोड़ कर उसमें अस्वाभाविकता, अमर्यादा और असाधारणता डालकर फिल्मी कहानियां गढ़ी जाती हैं। उनको स्वाभाविक सिद्ध करने के लिए उनमें बहुत-सी कल्पित बातें जोड़ दी जाती हैं। उदाहरणार्थ किसी विवाहित स्त्री का किसी परपुरुष से अनुचित सम्बंध दिखाने की फिल्मी कहानी बनाने के लिए उसके पति को एक दुष्ट व्यक्ति दिखला दिया जाता है। या किसी कुंआरी कन्या के किसी नवयुवक से सम्बंध स्थापित करने को उचित जतलाने के लिए उस कन्या के पिता को शराबी दिखला दिया जाता है। इस प्रकार की फिल्मी कहानियां पारिवारिक जीवन पर बड़ा बुरा असर डालती हैं। लोग अपने निजी जीवन में भी फिल्मी फार्मूलों का अनुकरण करके व्यवहार करने लगे हैं जिससे पारिवारिक अशान्ति बढ़ रही है और बहुत से परिवार तो इन फिल्मों की बदौलत उजड़ चुके हैं। फिल्मी कहानियों को रोचक बनाने के लिए उनमें धार्मिक व्यक्तियों को प्रायः पाखंडी के रूप में चित्रित किया जाता है। इसी तरह हत्यारों, तस्करों और जेबकतरों इत्यादि को फिल्मों के हीरो चित्रित करके उनको बड़े ही दयालु, मेहरबान और गरीबों के हमदर्द दिखलाया जाता है। इससे मनुष्यों की धर्म के प्रति उपेक्षा और अपराध के प्रति सहानुभूति अथवा लापरवाही बढ़ती है, जिससे समाज में अमर्यादा और अराजकता फैल रही है।

फिल्म अभिनेताओं के निजी जीवन का प्रभाव

यह एक कटु सत्य है कि फिल्मों में हीरो-हीरोइन का पार्ट अदा करने वाले धनाढ्य अभिनेता-अभिनेत्रियां अपने निजी जीवन में प्रायः भोगी-विलासी और ऐश्वर्य पसंद होते हैं। जो लोग बिना जनता का भला-बुरा सोचे केवल धन कमाने की गरज-से ही हर प्रकार की बेशर्मी की अदाकारी करने को तैयार रहते हों, उनके निजी चरित्र का अनुमान लगाना कोई कठिन बात नहीं है। परंतु यह भी एक अति गुह्य मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक तथ्य है कि जो चीज मनुष्य के अपने पास हो, उसी का 'दान' वह दूसरों को भी दे सकता है। इसी तथ्य के अनुसार जब ये अभिनेताएं फिल्मों में भी भोग-विलास अथवा चरित्रहीनता की अदाकारी करते हैं तो दर्शकों पर उनका अभिनय गहरा असर डालता है क्योंकि यह बातें अभिनेताओं के निजी जीवन में भी होती हैं; परंतु जब वे किसी देवी-देवता या संत-महात्मा के फिल्मी रोल निभाते हैं, तब उनका अभिनय बस अभिनय ही होकर रह जाता है और उसका दर्शकों पर कोई स्थाई असर नहीं पड़ता। क्योंकि अभिनेताओं के अपने जीवन में वैसी धारणाएं नहीं होतीं। यह एक अति सूक्ष्म सत्यता है जो गंभीरतापूर्वक विचार करने के योग्य है। इसी के आधार पर उक्ति प्रसिद्ध है कि—'सत्संग तारे, कुसंग बारे' अथवा 'मनुष्य अपनी संगत से जाना जाता है' (A man is known by the company he Keeps)। आज के कलियुगी साधू-संन्यासियों के उपदेशों का उनके अनुयायियों पर प्रभाव न पड़ने का भी यही कारण है कि उनके निजी जीवन में वे धारणाएं नहीं होतीं जिनकी शिक्षा वे दूसरों को देते हैं। यही मूल कारण है कि सिनेमा में दिखलाई गई बुराई तो मनुष्यों के दिल में घर करके समाज में फैल रही है परंतु अच्छी बातों का जनता पर कोई असर नहीं होता। इसलिए सिनेमा को 'सत्संग' नहीं बल्कि एक्टर-एक्ट्रेसों का 'कुसंग' ही कहेंगे जिसके प्रभाव से ही आज घर-घर में इन्हीं फिल्म-स्टारों के चित्र और कैलेण्डर टंगे हुए नज़र आते हैं।

फिल्मों में अभिनेताओं की अदला-बदली

फिल्मों में प्रसिद्ध अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को बदल-बदल के पार्ट दिया जाता है। एक ही अभिनेत्री विभिन्न फिल्मों में भिन्न-भिन्न अभिनेताओं के साथ काम करती है। इसका भी हमारे समाज के विवाहित-जीवन के पवित्र सम्बंध पर एक बहुत ही सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभाव पड़ता है। फिल्मों में अभिनेता-अभिनेत्रियों की इस अदला-बदली को निरंतर देखते रहने से पति-पत्नी के जीवन सम्बंध की पक्की डोर में भी, अनजाने में ही, एक अति सूक्ष्म ढील आ जाती है जो सामान्य परिस्थितियों में तो अर्ध-चेतना में दबी रहती है परंतु किन्हीं परिस्थितियों में प्रत्यक्ष भी हो जाती है और उनके जीवन में विष घोल देती है। □

बेलगाम: ब्र० कु० आत्मप्रकाश ज़िला परिषद के अध्यक्ष से ज्ञान चर्चा करते हुए।

भगवान् के साथ सर्व सम्बंधों की अनुभूतियां

□ बी.के. राम बहादुर सिंह, कानपुर

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम् देव देवम्।।

परमात्मा के साथ सर्व सम्बंधों की अनुभूतियां ही मानव जीवन की सबसे अमूल्य अनुभूतियां हैं। जहां सम्बंध होता है वहां सम्बंध गत अनुभूतियां भी स्वाभाविक हो जाती हैं।

"मेरा तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई..." यह अभिव्यक्ति हृदय से निकली सम्बंध की ही अनुभति है। प्रेम दीवानी मीरा ने श्रीकृष्ण को अपने प्रियतम् के रूप में वरण करके अपना सारा जीवन ही प्रियतम् और प्रियतमा की दिव्य अनुभूतियों में ही निमग्न कर दिया।

सती अनुसुइया ने तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को बाल रूप में झूले में झुलाकर प्रभु प्रेम के वात्सल्य रस से अपने हृदय को ओत-प्रोत करके माता और पुत्र के सम्बंध की सहज अनुभूति की थी। परंतु आज आत्मा परमात्मा का सम्बंध केवल कथन मात्र तक ही रह गया है, व्यवहारिक जीवन में नहीं है वरना उन सम्बंधों की दिव्य अनुभूतियों का प्रभाव जीवन में दिखायी देना चाहिए। जिसका पिता सुख शान्ति का सागर हो उसके बच्चे सुख शान्ति की भीख मांग रहे हों, जिसका पिता सर्व का सद्गति दाता हो और उसके बच्चे दुर्गति में हों, पिता ज्ञान का सागर हो और बच्चे अज्ञान अंधकार में भटक रहे हों, पिता पतितपावन हो और बच्चे विषय विकारों में लिप्त हों, जीवन का यह विरोधाभास ही सिद्ध करता है कि परमात्मा पिता से हमारा सम्बंध टूटा हुआ है। सांसारिक सम्बंधों का प्रभाव हमें स्पष्ट दिखायी देता है। जैसे एक राजकुमार से राजा का पुत्र होने का नशा उसके व्यवहार से स्पष्ट दिखायी देता है तथा उसकी मानसिक, आर्थिक, एवं सामाजिक स्थिति भी सम्बंध के अनुरूप दिखायी देती है।

१. **सम्बंध के लिए पहचान आवश्यक है**—पहचान के बिना बच्चे का अपने माता-पिता से सम्बंध जुट नहीं पाता। बच्चे को अपने माता-पिता का नाम, रूप, गुण व व्यवसायिक ज्ञान आवश्यक है। पिता का परिचय ही उसकी स्मृति, वाणी व व्यवहार को मर्यादित व प्रभावित करता है। वह वैसे ही कर्म करता है जो उसके कुल व धर्म के अनुकूल हों। अतः परमात्मा से सम्बंध जोड़ने के लिए हमें उसके नाम, रूप, गुण, धाम और कर्त्तव्य का परिचय होना आवश्यक है।

२. **सम्बंध निर्वाह हेतु समर्पणमयता आवश्यक है**—लौकिक सम्बंधों के निर्वाह में भी समर्पण की आवश्यकता होती है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के सम्बंधों में एक-दूसरे के प्रति इतना समर्पण होता है जैसे उनका **सारा जीवन ही एक-दूसरे के लिए हो।** सम्बंधों के प्रति ही वे अपना अमूल्य समय, शक्ति एवं धन लगाते हैं। उदाहरणार्थ—एक व्यक्ति जब ऑफिस से घर लौटता तो वह रास्ते में सोचता है कि बच्चों के लिए अथवा पत्नी के लिए अमुक-अमुक वस्तु ले जानी है अर्थात् उसकी बुद्धि सम्बंधों में ही लगी रहती है। इसी प्रकार परमात्मा पिता से सर्व सम्बंध जोड़ने का अर्थ **है कि मन को उसकी लगन में मगन रखना।** तन-मन-धन को परमात्मा की अमानत मानकर स्वयं को ट्रस्टी समझ कार्य व्यवहार करना। इससे जहां एक ओर आसक्ति समाप्त होगी वहीं दूसरी ओर उसका जीवन घर गृहस्थ में रहते हुए भी कमल पुष्प समान न्यारा व प्यारा बन जायेगा।

३. **सम्बंधों के अनुरूप आचरण आवश्यक है**—सम्बंधों के अनुरूप ही व्यक्ति का व्यवहार होता जैसे एक पुत्र जब अपने पिता से मिलने आता है तो वह पिता को स्नेह व आदर से अभिवादन करता है तथा उनके सम्मान के अनुरूप ही आचरण करता है। उसके कर्मों पर भी पिता के धर्म, कुल, मर्यादाओं, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की छाप रहती है। ठीक इसी प्रकार परमात्मा के साथ सम्बंध होने का अर्थ भी यही है कि मनुष्य के संकल्प, वाणी व कर्म पर ईश्वरीय विशेषताओं अर्थात् ज्ञान, सुख, शान्ति, आनंद एवं पवित्रता की छाप स्पष्ट दिखायी दे अर्थात् उनके संकल्प, वाणी व कर्म भी दूसरों के लिए सुखदायी, शान्तिप्रद एवं कल्याणकारी हों। उनका व्यवहार ईश्वरीय मर्यादाओं के अनुकूल हो। जैसे एक पुत्र अपने पिता के व्यवसाय को सहज ही सीखकर पिता के कार्य में सहयोगी बन जाता है उसी प्रकार परमात्मा पिता से सम्बंध जुटाने के लिए भी आवश्यक है कि हमें सदा यह स्मृति रहे कि यह सृष्टि मेरे पिता की है तथा इसे पावन व सुखमय बनाना ही मेरा दायित्व है। मेरे पिता सृष्टि पर दैवी धर्म की स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य करते हैं अतः मुझे भी कोई ऐसा कार्य नहीं करना जिससे अधर्म, अनाचार और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिले। उसका जीवन दिव्यता से सम्पन्न एवं आचरण ईश्वरीय मर्यादाओं से दिशा-निर्देशित होता है। ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा जा सकता है कि उसका सम्बंध परमात्मा पिता से है।

परमात्मा पिता के साथ सर्व सम्बंध होने की निशानियां—

जब परमात्मा पिता के साथ सच्चा सम्बंध स्थापित हो जाता

शेष पृष्ठ ३१ पर

"सच्ची समाजसेवा"

□ बी.के. 'प्रकाश', राजयोग भवन, भोपाल

सेवा से अभिप्राय ऐसे कार्यों से है जो दूसरों के हित लाभ के लिए या दूसरों के सहायतार्थ किये जाते हैं। सेवा, मानवता का एक बहुत बड़ा लक्षण है। जिस मनुष्य में सेवा की भावना नहीं वह स्वार्थी, अहंकारी और असामाजिक होता है। समाज में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से जोड़ने का कार्य सेवा ही कर सकती है। क्योंकि सेवा वह प्रयास है जो यदि सच्चे हृदय से की जाए तो उसमें मानवता के सभी मूलभूत गुण जैसे दया, प्रेम, करुणा, सहयोग, शुभभावना, आत्मीयता आदि स्वतः ही समाविष्ट होते हैं।

आज के युग में समाजसेवा का विषय और उसकी प्रासंगिकता बहुत व्यापक हो गई है। कई बार हम ऐसे लोगों को भी यह कहते पाते हैं कि हम समाजसेवा कर रहे हैं जिन्हें न तो समाज के नियमों का ज्ञान है और न ही वे सेवा के अर्थ से पूर्णतः भिज्ञ हैं। वर्तमान समय अनेक प्रकार की सेवा के रूप हैं—जैसे अनाथालय, औषधालय, नारी कल्याण केंद्र, मूक, बधिर कल्याण केंद्र, प्रौढ़ शिक्षा, ग्राम सेवा आदि। इन सबके माध्यम से समाज के प्रतिष्ठित लोग या कुछ लोगों का सामाजिक संगठन, ट्रस्ट या सरकार द्वारा चलाई गई कुछ कल्याण नीतियों के अंतर्गत सेवा के ऐसे छुटपुट प्रयास किये जा रहे हैं, परंतु विडंबना है कि इन सभी प्रयासों द्वारा वास्तविक हित लाभ समाज के उन कमजोर और दलित वर्ग के लोगों को नहीं मिल पा रहा है जिनके हितार्थ ये व्यापक योजनाएं तैयार की गई हैं। दूसरे अर्थों में समाजसेवा के साधन चाहे वे सरकारी हों या गैर सरकारी, निर्धारित नियमों और संविधान का पूर्ण पालन नहीं कर रहे हैं। अर्थात् सेवा में समर्पण भाव, सत्यता, लगन और ईमानदारी की कमी हर जगह है। बल्कि यदि गहराई में जाकर देखें तो ये समस्त समाजसेवाएं भी व्यक्तिगत स्वार्थ की आधार बन गई हैं। उदाहरणार्थ किसी समय लोग धर्मशालाएं आदि गरीब और शरणार्थियों के लिए बनाया करते थे, जो सेवा निःशुल्क थी। लेकिन आज के युग में धर्मशालाएं आदि भी होटलों की भांति आय का स्रोत और भ्रष्ट कर्मों का अड्डा बन गई हैं। यथार्थ में उन्हें धर्मशाला कहना ही गलत है। इसी प्रकार आज सरकार द्वारा खोले गये अनाथालय और नारी कल्याण केंद्रों में वास करने वाले बालक, बालिकाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। उनके शिक्षण-पोषण और संरक्षण पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। अनेक प्रसंग नारी गृहों में कुकृत्य और अपहरण के सम्बंध में सुनने में आते हैं जिसमें संस्था के संरक्षकों की मूल भूमिका रहती है। इसी प्रकार सरकार कहीं राष्ट्रीय सेवा योजना के नाम से, कहीं ग्राम सेवा के नाम से, आदिवासी कल्याण समिति, हरिजन विकास योजना, दलित कल्याण केंद्र अथवा कमजोर वर्गों हेतु आयोजित अनेक राहत योजनाओं के माध्यम से प्रति वर्ष लाखों रुपये का बजट सम्बंधित योजनाओं को आबंटित करती है। परंतु प्रायोगिक स्तर पर यह राशि उन गरीब या असहाय लोगों तक नहीं पहुंच पाती। बल्कि उसका बंटवारा योजना में मध्यस्थ कर्मचारी व अधिकारी आपस में कर लेते हैं। इस प्रकार सेवा की योजनाएं तो दिन-प्रतिदिन नई-नई बनती जा रही हैं परंतु उनका क्रियान्वयन अत्यंत दोषपूर्ण है। इसलिए विचार कीजिए ऐसी सेवा का प्रतिफल और प्रयोजन क्या है?

इन कार्यों के अलावा समाज के विभिन्न राजनीतिक और अराजनीतिक संगठन समाजसेवा का बाना ओढ़कर समाजसेवा का ढोंग रचाने के दृष्टिकोण से सेवा के नये-नये हथकंडे अपनाने लगे हैं। जैसे पदयात्राएं करना अथवा चुनाव आदि के समय वोट लेने के ध्येय से किंचित गरीबों को भोजन वस्त्रादि बांटना, अथवा धन का लालच देना। कहीं कुएं आदि खुदवा देना या छोटी-मोटी सड़क आदि बनवा देना, आदि कार्य पूर्ण भभके के साथ में करते हैं। परंतु उनकी यह सेवा प्यासे के मुंह में एक बूंद पानी का काम करती है क्योंकि चुनाव समाप्त होते ही फिर समाज के वो नुमाइंदे उन मैले-कुचैले चेहरों और गंदी गलियों को जैसे भूल ही जाते हैं। बल्कि कई बार अधिकार प्राप्त हो जाने पर वही लोग उन गरीबों पर अत्याचार करते देखे जाते हैं। क्या यही है आज की समाजसेवा का स्वरूप?

इस संदर्भ में एक बात और भी विचारणीय है कि वर्तमान समय जो भी सेवाएं की जा रही हैं उन सभी का स्वरूप स्थूल है अर्थात् सेवा के माध्यम से येन-केन-प्रकारेण असहाय और दलित या निम्न वर्ग के लोगों का भौतिक स्तर ऊंचा उठाने का प्रयास तो कुछ हद तक किया जा रहा है परंतु उनके मानसिक स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास बिल्कुल नहीं किया जा रहा है। जबकि देखा जाए तो जीवन का उतना सम्बंध धन से नहीं जितना सम्बंध व्यक्ति के मन से होता है। उदाहरण स्वरूप संसार में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जो अत्यंत निर्धन घरों में पैदा हुए हैं परंतु मन की श्रेष्ठता और बौद्धिक शक्ति से वे बहुत महान् बन गए। मन की क्षमता से उन्होंने धन और सम्मान दोनों अर्जित कर लिया। वहीं दूसरी ओर इतिहास में ऐसे भी उदाहरण हैं जहां मनोबल हीनता के कारण अथवा विवेक शून्यता के कारण या चरित्र की किसी

कमजोरी के कारण बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी अपने राजपाट और पद-प्रतिष्ठा से हाथ धो बैठे। इस प्रकार देखा जाए तो धन की गरीबी से बड़ी मन की गरीबी है। और वर्तमान समय समाज में जो दुर्भिक्ष, गरीबी और लाचारी है उसका प्रधान कारण मन की गरीबी है अथवा चारित्रिक दुर्बलताएं हैं। परंतु खेद की बात है कि इस राष्ट्र के संविधान के निर्माताओं, राजनेता और समाज के प्रणेताओं ने इस ओर कभी सोचने का प्रयास ही नहीं किया। वह सिर्फ देश की महंगाई, बेरोजगारी और बढ़ती जनसंख्या को ही भयानक समस्या मानकर ढ़िढोरा पीटते फिर रहे हैं। परंतु वे समस्याएं भी उनसे दूर नहीं हो रही हैं क्योंकि वे इन समस्याओं को भी जन्म देने वाले मूल कारण या मूल समस्या को नहीं पहचानते।

यदि भारत के बीहड़ों और ग्रामीण अंचलों में,झुग्गियों और झोंपड़ियों में वास करने वाले गरीब लोगों के जीवन का सूक्ष्म सर्वेक्षण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि अत्यंत गरीब और दु:खी वही हैं जो या तो असभ्य और अशिक्षित हैं, आलसी और अकर्मण्य हैं अथवा कुत्सित मनोवृत्तियों के शिकार हैं। देश की आबादी के ६० प्रतिशत लोग अपनी आमदनी का ५० प्रतिशत से अधिक भाग फैशन, नशाखोरी, जुआ-सट्टा और वेश्यावृत्ति में खर्च कर देते हैं। बच्चों की शिक्षा व भविष्य की योजनाओं के लिए उनका व्यय नहीं के बराबर होता है। तो सोचिए भला ऐसे व्यक्तियों का भविष्य उज्ज्वल कैसे बन सकता है? इतना ही नहीं चूंकि इन लोगों के बौद्धिक स्तर को उठाने का प्रयास और उनमें कर्मठता जगाने का प्रयास सही रूप में नहीं किया जा रहा है अत: परिणामत: सरकार द्वारा इन्हें जो ऋणमुक्त राशि और नौकरी, व्यवसाय आदि के खुले अवसर दिये जा रहे हैं, उसका भी ये पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते अथवा उसका दुरुपयोग करते हैं।

अत: वास्तव में उपरोक्त समस्त समस्याओं को यदि समाजसेवी और राजनीतिज्ञ दूर करना चाहते हैं तो उन्हें समाजसेवा के सच्चे स्वरूप को समझना पड़ेगा। और इस प्रकार की सेवा के लिए प्रत्येक समाजसेवी को सर्वप्रथम स्वयं चरित्रवान् होना आवश्यक है। इसके अलावा चूंकि सेवा, दया, प्रेम और मानवता का समन्वित फल है इसलिए समाजसेवकों में यह सारे गुण होने चाहिएं। कहा गया है, "परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई।" अर्थात् दूसरों की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है एवं दूसरों को दु:ख देना सबसे बड़ा पाप है। इसलिए समाजसेवा इस भाव से न की जाए कि मुझे दूसरों का समर्थन, सम्मान या ख्याति की प्राप्ति हो वरन् सेवा इसलिए की जाए क्योंकि सेवा मानवता का परम धर्म है। तो अपने इस धर्म के पालन में चाहे कितना ही त्याग व तपस्या करनी पड़े, तन-मन-धन का दान करना पड़े, श्रम और शक्ति लगाना पड़े, हमें खुले दिल से लगाना चाहिए। उसके बदले में कुछ भी पाने की इच्छा रखना, की हुई सेवा को समाप्त करना है। यही नि:स्वार्थ सेवा है। यदि हम समाजसेवी हैं तो समाज के उन लोगों का आदर्श बनाएं जिन्होंने दूसरों की सेवा के लिए अपना चैन, आराम और अपना सारा जीवन लगा दिया। उदाहरण के लिए महात्मा गांधी, मदर टेरेसा आदि जैसे कई महापुरुष जो समकालीन हैं, सेवा के मार्ग में हमारा आदर्श बन सकते हैं, सेवा में स्वार्थपरता और लोलुप के स्थान पर संपूर्ण समर्पण लगन, ईमानदारी, मेहनत और त्याग की भावना चाहिए। इसके बिना हम अच्छे समाजसेवी नहीं बन सकते। कुछ लोग समझते हैं कि दूसरों को भोजन खिलाना, रोगी को स्वास्थ्य लाभ करा देना, वस्त्र दान देना आदि महान् सेवा है परंतु कोई इस कारण पर विचार नहीं करता कि अमुक व्यक्ति भूखा, रोगी, गरीब या नंगा क्यो है, न ही उस व्यक्ति को उसकी उस कमजोरी के कारण का एहसास कराने का कोई साहस या प्रयास करता है। परिणाम यह होता है कि भूखा सदैव भूखा बना रहता है, रोगी सदैव रोगी बना रहता है और नंगा सदा नंगा बना रहता है,क्योंकि अज्ञानतावश और बुरे संस्कारों के वशीभूत होने के कारण भूखे गरीब लोग भिक्षा से प्राप्त धन और अन्न को व्यसनों, शराब आदि में खर्च कर डालते हैं तो भला ऐसी सेवा से फायदा भी क्या है? इसी प्रकार रोगी को रोग की उत्पत्ति का कारण न मालूम होने के कारण वह बार-बार विकर्मों और व्यसनों में फंसकर रोग का शिकार हो जाता है। और वास्तव में तो सारे शारीरिक रोगों की उत्पत्ति भी मन के द्वारा ही होती है। अत: यह कहना अनुचित न होगा कि मनुष्य तन का रोगी होने से पहले मन का रोगी है। तो विचार करें कि हम मन के रोग के निवारण के लिए क्या प्रयास करते हैं और जिस आदमी का मन स्वस्थ न हो उसके शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होने का कोई औचित्य नहीं है। भारत में ऐसे कई लोग जो शारीरिक दृष्टि से अच्छा स्वास्थ्य रखते हुए भी शराब और दुर्व्यसनों में धुत्त पड़े रहते हैं और अपने धन, शरीर और मन की शक्ति को नष्ट कर रहे हैं। क्या ऐसे मानसिक रोगियों का भी कोई उपचार है? आखिर ये व्यक्ति तो सर्व साधन होते हुए भी गरीब हैं, परिवार होते हुए भी अनाथ हैं तथा समाज की मर्यादा को त्याग देने के कारण नंगे हैं?

अत: निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि तन की सेवा से अधिक महत्त्वपूर्ण मन की सेवा है। अत: हमें भूखे, गरीबों का भोजन, वस्त्र देकर खुश नहीं हो जाना चाहिए बल्कि उसमें आत्मबल का विकास करके उनमें विवेक और बौद्धिक क्षमता को जागृत करना चाहिए। उन्हें मनुष्य के जीवन का महत्त्व, आत्मा की अद्भुत शक्ति, श्रम और पुरुषार्थ के महत्त्व को स्पष्ट करना चाहिए। उन्हें ज्ञान देना चाहिए कि इंसान भूखा रहकर तो नहीं मरता लेकिन अपना स्वाभिमान खोने से और दूसरों के आगे हाथ

फैलाने से अवश्य मर जाता है। इसलिए मनुष्य को अपने तन से परिश्रम कर अपना उदर भरना चाहिए। इसी में उसका सौभाग्य है। और पाप कर्मों से बचते हुए मनुष्य सदा श्रेष्ठ कर्म करता रहे यही ईश्वर की आराधना है, पुण्य का मार्ग है। यदि इस संसार में आकर हम इन दोनों हाथों और दो पैरों को पाकर स्वयं की जीवन की सुरक्षा और संभाल भी नहीं कर सकते तो हमारा मनुष्य जीवन लेने का लाभ क्या हुआ? क्योंकि यह कार्य तो हमसे बेहतर पशु और पक्षी कर लेते हैं, फिर श्रम वह शक्ति है जिससे संसार की गरीबी ही क्या कोई भी ऐसी समस्या नहीं है जिसका निदान न हो सके और श्रम करने से कदापि कोई मरता नहीं है। हां, श्रम न करने वाला अवश्य शीघ्र मर जाता है।

इस प्रकार समाजसेवा के क्षेत्र में मूल आवश्यकता मानसिक या आध्यात्मिक सेवा की है। जब तक मनुष्य को स्वयं का ही ज्ञान नहीं है वह संसार में कुछ और क्या करेगा? अतः आवश्यकता है कि चाहे हम तन से अथवा धन दान देकर या अन्य किसी साधन से भले ही सेवा कर रहे हैं परंतु उस सेवा के साथ-साथ हम समाज के गिरे हुए, असहाय, गरीब और पतित लोगों के साथ ही समाज के समुन्नत लोगों को जो चरित्र से भ्रष्ट हैं, जो अमीर हैं परंतु मानसिक दुर्बलता के, कुण्ठा के शिकार हैं जो अधिकारी हैं परंतु मन के गुलाम हैं, ऐसे लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा का दान भी अर्थात् स्व या आत्मा का ज्ञान और आत्मा के रचयिता पिता परमात्मा का ज्ञान, मन और बुद्धि की शक्ति का आभास उन्हें कराना आवश्यक है। और यह कार्य विगत् ५२ वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नामक एक अंतर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक समाजसेवी संस्थान द्वारा विश्व स्तर पर किया जा रहा है। तथा अपने प्रयास में उसने देश और विदेश में बहुमुखी सफलता प्राप्त की है। इस संस्था के लोग समाज के सच्चे सेवक हैं। वे शुभचिंतक व सच्चे हितैषी के रूप में गांव-गांव जाकर, शहर-शहर, झोंपड़ियों और गंदी बस्तियों में निःस्वार्थ भाव से लोगों की आध्यात्मिक सेवा में तत्पर देखे जा सकते हैं। विशेष बात यह है कि मानव कल्याण और चरित्र उत्थान की सेवा में उन्हें अधिकाधिक सफलता मिल रही है क्योंकि वे स्वयं चरित्रवान् हैं। ये लोग जिन दुर्गुणों, बुराइयों को छोड़ने के लिए दूसरों से कहते हैं, स्वयं उसका त्याग कर चुके हैं। इनका जीवन पूर्ण व्यावहारिक है और इनमें लगन, ईमानदारी और अथक श्रम करने की क्षमता है। इनका ध्येय दूसरों को उठाना है न कि पैसे कमाना। इसलिए जनमानस को यह अपने स्नेह, करुणा, सहयोग और ज्ञान की शक्ति से सहज ही परिवर्तन कर देते हैं। यही सच्ची सेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप है। मनुष्य के मनोविचार परिवर्तन होने से उसका सारा जीवन सुख शान्तिमय, आनंदमय बन जाता है। वह यह समझ जाता है कि मानव जीवन का मूल्य क्या है, उसमें जीवन जीने की श्रेष्ठ कला आ जाती है। इस संस्था के प्रयास से ऐसे हजारों इंसान हैं जो डाकू से साधू या दुष्ट पुरुष से श्रेष्ठ बन गए। उनके व्यर्थ खर्चे और बुराइयां समाप्त हुईं। यह कमाल इस सर्वोपरि मनोपरिवर्तन की आध्यात्मिक समाजसेवा का ही है।

इस संदर्भ में यह बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वास्तव में सबसे बड़ा समाजसेवक/विश्व सेवक तो आध्यात्म के पिता स्वयं परमपिता परमात्मा शिव हैं जिन्हें ज्ञान का सागर कहा जाता है। आध्यात्म का यह ज्ञान भी अनेक बार सृष्टि पर आकर परमात्मा ही देते हैं। पुनः सृष्टि के अंतिम क्षणों में परमपिता शिव उस ज्ञान का पुनरावर्तन कर रहे हैं। अतः हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि परमात्मा जो त्रिकालदर्शी हैं, जब वे स्वयं पतित मनुष्यों की सेवा के लिए सृष्टि पर अवतरित होते हैं और दुष्ट और पापियों का भी उद्धार करते हैं तो क्या परमात्मा की संतान होने के नाते ऐसी ही सेवा का कर्त्तव्य हम मनुष्यात्माओं का नहीं है। इस प्रकार यदि हम समाजसेवा करना चाहते हैं तो ऐसी सच्ची समाजसेवा का अनुकरण करें या सहयोगी बनें तो निश्चित ही श्रेष्ठ सुसंस्कृत, सुख-शान्तिमय समाज का गठन हो सकेगा जहां लोगों में परस्पर प्रेम, एकता, सद्भाव व सहयोग होगा। हिंसा, अराजकता, अनेकता व अत्याचार की आंधी के इस दौर में आज ऐसी समाजसेवा की आवश्यकता है व इसी से यथार्थ में जनकल्याण संभव है। □

पृष्ठ ७ का शेष

एक में ही सर्वस्व देखने लगते हैं, हम उसमें ही तन्मय हो जाते हैं। वास्तव में हम रहते ही नहीं, केवल वही रह जाता है। इस प्यार में हमारे सभी संकल्प एकाग्र हो जाते हैं, अन्य सम्बंध फीके पड़ जाते हैं और निरंतर उसी की याद में मन मग्न हो जाता है, पुरुषार्थ की सारी जटिलताएं समाप्त हो जाती हैं और मन मग्न हो जाता है।

तो आओ, इस संगमयुग पर उस अलौकिक प्रियतम् से पूरा साथ निभायें, उसका पूरा सुख लें, इस जीवन को संपूर्ण आनंद से भर दें। परंतु यह तब ही संभव होगा, जब हम पूर्ण मर्यादाओं का ध्यान रखेंगे, जब हम सच्चा दिल बनाकर उसके दिल पर राज्य करेंगे। यदि तनिक भी खोट किसी सजनी के दिल में होगा तो वह ईश्वरीय सुख से वंचित रह जायेगी। यह सुख चारों युगों में केवल एक बार ही मिलता है। यदि अब इसका अनुभव न किया तो कभी नहीं कर सकेंगे। देवता भी प्रियतम् बने और मनुष्य भी, परंतु पद्मापद्म भाग्यशाली हैं वे रूहें, जिनका प्रियतम् स्वयं भगवान् बना। □

ईश्वरीय सेवा के बल की गुप्त मदद मिलती है

□ ब्र.कु. जगरूप, कृष्णानगर, दिल्ली

ईश्वरीय सेवा दधीचि ऋषि बनाती है,आराम-पसंद नहीं प्रभु-पसंद बनाती है,अनेक आत्माओं को आशीर्वाद के पात्र बनाती है, सूली से कांटा और कांटे से फूल बनाती है।

क्योंकि मुझे अपनी आंख का ऑपरेशन कराना था इसलिए बापदादा के महावाक्यों व शिक्षाओं को कि "मीठे बच्चे,ईश्वरीय सेवा अनेक आत्माओं की आशीर्वाद के पात्र बनाती है" याद कर मुझे यह संकल्प आया कि सेवाकेंद्र की तरफ से जो ४-५ दिन के चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया है, इसकी समाप्ति के पश्चात् ही आंख का ऑपरेशन कराऊंगा। प्रदर्शनी में यथा शक्ति अथक सेवा के पश्चात् मैंने आंख का ऑपरेशन कराया जो बापदादा की कृपया से बिल्कुल ठीक हो गया। ऑपरेशन के समय डॉक्टर ने आंख में एक टांका लगाया था जिसका मुझे मालूम नहीं था। दो-दिन के बाद आंख की पट्टी खोलने के बाद जब मैंने शीशा देखा तो मुझे लगा कि मेरी आंख में एक मोटा बाल पड़ा है जो चुभ रहा है। थोड़ा दर्द हो रहा था। परंतु यह बाल नहीं था यह तो डॉक्टर का लगाया हुआ टांका था जो मुझे मालूम नहीं था। शीशा देखते ही मैं अस्पताल में डॉक्टर के पास गया परंतु डॉक्टर छुट्टी पर था, मैं उसी समय दूसरे अस्पताल में दूसरे डाक्टर के पास चला गया क्योंकि मैं सोच रहा था यह बाल जल्दी निकल जाये और आंख का दर्द बंद हो जाये। दूसरे डॉक्टर के पास पहुंचते ही वहां उपस्थित डॉक्टर के कम्पाऊंडर ने कहा कि डॉक्टर साहब ५-७ मिनट में आ जायेंगे। कम्पाऊंडर ने मेरे से पूछा क्या आपको आंख दिखानी है? मैंने कहा मेरी आंख में बाल पड़ा है वो निकालना है। कम्पाऊंडर ने कहा यह तो मैं ही निकाल देता हूं। मुझे लिटाकर मेरी आंख को देखते ही कम्पाऊंडर ने कहा, अरे! यह तो बहुत मोटा बाल है मैं अभी खींच देता हूं। जैसे ही उसने लोहे की चिमटी उठाकर मेरी आंख के नजदीक की तो इतनी देर में डॉक्टर की आवाज आई ठहरो, ठहरो मैं देखता हूं। डॉक्टर ने आंख देखते ही पूछा कि क्या आपकी आंख का ऑपरेशन हुआ है? मैंने कहा हां जी! डॉक्टर ने कहा यह बाल नहीं, यह तो टांका है जो एक-दो दिन के पश्चात् खुलेगा। इतना कहते ही डॉक्टर फिर बोला कि आज तो आपके ऊपर ईश्वर की कृपा हो गई, अगर मैं एक मिनट भी लेट हो जाता तो आप अपने नेत्र के प्रकाश से वंचित हो जाते। मैं तो अंदर ही अंदर बापदादा का बार-बार शुक्रिया करने लगा और सोचने लगा कि यह ईश्वर (बापदादा) और ईश्वरीय सेवा के बल की मदद थी जिसने मेरे कर्म भोग को सूली से कांटा तो क्या परंतु कांटे से फूल बना दिया।

ईश्वरीय सेवा के लिए ईश्वर (बापदादा) के ब्राह्मणों के प्रति महावाक्य हैं कि "मीठे बच्चे आराम-पसंद नहीं, प्रभु-पसंद बनो, मीठे बच्चे,दधीची ऋषि की तरह अथक सेवाधारी बनो, मीठे बच्चे, ईश्वरीय सेवा की जिम्मेवारी के ताजधारी बनो तो भविष्य में डबल ताजधारी बनोगे, मीठे बच्चे, ईश्वरीय सेवा द्वारा अनेक आत्माओं की आशीर्वाद लेने के पात्र बनो। मीठे बच्चे, ईश्वरीय सेवा द्वारा सुख लो और सुख दो।"

वैसे तो इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में हमारे चार विषय (ज्ञान, योग, धारणा, सेवा) हैं, चारों विषयों की सम्पन्नता ही हमें सर्वगुण सम्पन्न बनायेगी। चारों विषयों का ईश्वरीय सेवा का अपना महत्त्व है क्योंकि ईश्वरीय सेवा में जब हम अपना तन लगाते हैं तो जहां तन लगेगा वहां मन भी अवश्य लगेगा। जहां तन और मन दोनों लग जाते हैं तो धन कहीं और लग नहीं सकता और जहां तन-मन-धन तीनों लग रहे हैं वहां हमारा समय, श्वास और वाचा भी सफल हो जाते हैं अर्थात् ईश्वरीय सेवा में हमारा सब-कुछ सफल होता है। ईश्वरीय सेवा से ज्ञान की प्रकाष्ठा बढ़ती है, योगयुक्त स्थिति के लिये सहयोग मिलता है, धारणामूर्त्त बनने में मदद मिलती है अर्थात् ज्ञान, योग, धारणा की सम्पन्नता के लिये ईश्वरीय सेवा लिफ्ट का कार्य करती है।

ईश्वरीय सेवा हमारी स्वस्थिति का मापदंड भी है क्योंकि सेवा के समय अनेक आत्माओं के संपर्क में आने के कारण व कभी सुविधा-असुविधा की प्राप्ति होने के कारण व अनेक बातें व रुकावटें आने के कारण हम अपनी स्वस्थिति को भी चैक कर सकते हैं। ईश्वरीय सेवा द्वारा सहनशक्ति, समाने की शक्ति और परखने की शक्ति व नम्रता और धैर्यता का गुण वरदान के रूप में प्राप्त होता है। योग का प्रयोग ईश्वरीय सेवा में ही हो सकता है और जो धारणाएं निरन्त्र नहीं बन पातीं वह सहज ही निरन्त्र हो जाती हैं। जैसे मान लो आप प्रातःकाल ४ बजे निरन्त्र नहीं उठ पाते, कभी उठते कभी नहीं। परंतु अगर आप वाचा की सेवा द्वारा दूसरों को प्रातःकाल का महत्त्व बताएंगे तो उसकी सेवा के साथ आपकी भी हो जायेगी।

ईश्वरीय सेवा के लिए हमारे अंदर सदा उमंग, उल्लास, उत्साह बना रहे उसके लिए हम सदा याद रखें–

- ईश्वरीय सेवा ही सर्व के दिलों पर राज्य करने का एकमात्र साधन है अर्थात् स्वयं प्रिय, सर्व प्रिय व प्रभु प्रिय बन सकते हैं।
- हम सदा अथक सेवाधारी को ही देखें अर्थात् उसका ही संग

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

"...और उत्तर मिल गया"

ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

(प्रथम दृश्य)

समय–प्रातःकाल। स्थान–घर का शयनकक्ष।

मनुष्य सोकर जगा और उठकर खड़ा होने की तैयारी में ही था कि उससे उठा न गया शरीर में कुछ जकड़न सी महसूस हुई। वह सोच में पड़ गया कि उसे क्या हो गया है? तभी एक आहट-सी हुई। मनुष्य ने देखा, सामने खड़ी थी–'वाणी'।

मनुष्य–कहो वाणी, आज सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?

वाणी–हे मानव! आज मैं तुम्हें यह बताने आई हूं कि कल से सभी कर्मेन्द्रियां हड़ताल पर रहेंगी।

मनुष्य (चौंककर)–पर क्यूं? ऐसी क्या बात आन पड़ी?

वाणी–हरेक कर्मेन्द्री समझती है कि वही प्रधानमंत्री बनने की अधिकारी है।

मनुष्य–(कुछ सोचते हुए)–हूं! तो फिर...

वाणी–हरेक अपना महत्त्व जताने के लिए कल हड़ताल करेगी।

(इतने में रोष से तपती, उत्तेजित, फड़कती हुई आंखें प्रवेश करती हैं)

आंखें–हम तो जहान का नूर हैं। अरे मानव हम न होतीं तो तुम कुछ भी न देख सकते। संसार के सौंदर्य को तुम्हारे सामने हमने ही प्रत्यक्ष किया। हमारे बिना तो ठोकरें खा-खाकर तुम धूल में पड़े मिलो शरीर!

शरीर–देखो नैन! इतना अहंकार अच्छा नहीं होता है। मैं तो सर्व के सहयोग से ही चलता हूं।

आंखें–ठीक है! ठीक है! देख लेना इसका परिणाम भी...।

(इतने में अंगूठा दिखाते हुए दोनों हाथ प्रकट हुए)

मानव–(दोनों हाथों को पकड़कर सहलाते हुए)–अरे हाथो! तुम्हें क्या हो गया है जो सुबह-सुबह चले आए?

हाथ–अरे शरीर, हम न होते तो तुम्हारे मुंह में रोटी भी न जाती। हम पहाड़ों को खोदकर महल बना सकते हैं। हम रेगिस्तान में फूल उगा सकते हैं। मनुष्य चिंतित-सा कान लगाए सुन रहा था कि जोर से धम-धम की आवाज हुई। घूमकर उधर देखा कि चरण रुके पड़े हैं।

मनुष्य–(पास जाकर)–अरे! तुम आज यहां कैसे बैठे हो?

पैर–हां! हां! ध्यान से सुन लो, हमने तुम्हें आगे बढ़ाया और हमें धूल में मिला रखा है। हमें ही सबसे नीचे रखा।

मानव–नहीं, नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है।

पैर–तो फिर हमें शूद्र क्यों कहते हो?

मनुष्य–कर्म के अनुसार भाव समझो चरण, हरेक का अपना-अपना महत्त्व है।

पैर–हम इन चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आने वाले। सुन लो। अब तो हम एक कदम भी नहीं हिलेंगे।

मनुष्य–(लंबी सांस लेकर)–चलो! मुख का भी हाल पूछें। अरे मुख! आज अपनी जिह्वा द्वारा रूहरिहान क्यूं नहीं करते?

मुख–(रुआंसा सा होकर)–कल से हम अपना काम नहीं करेंगे।

मनुष्य–क्यों भई! तुम्हें क्या हो गया है?

मुख–मेरे द्वारा ही तो दूसरों को प्रभावित करते हो। मैं न होता तो तुम्हारे भावों की अभिव्यक्ति भी न हो पाती। मेरे बिना तो अरे मनुष्य तुम्हारा जीना ही बेकार है।

मनुष्य–(चित्त पड़ा सोचने लगता है)–मैं तो सबको समझाकर थक गया। हर कर्मेन्द्री अपने को सबसे बड़ा समझती है। आखिर...

(इतने में धीर-गंभीर बुद्धि प्रकट होती)

बुद्धि–आप इतने परेशान क्यूं हैं?

मनुष्य–ओह बुद्धि, आओ, आओ! देखो न! कैसा जमाना आ गया है? हर कर्मेन्द्री कुर्सी चाहती है।

बुद्धि–आप चिंता न कीजिए। इस समस्या का समाधान कोई बड़ी बात नहीं।

मनुष्य–(एकदम उछलकर)–क्या कुछ उपाय है तुम्हारे पास?

बुद्धि–हां! मेरी समझ में तो आप ब्रह्मा जी के पास चलिए। वे अवश्य ही कोई सुंदर हल निकालेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

(पट परिवर्तन)

(दूसरा दृश्य)

समय–'अमृतवेला'

बहुत ऊंचे पर्वत के पार बादलों के बीच ब्रह्मा जी तपस्या में मग्न बैठे हैं।

अचानक सामने मनुष्य को पाकर वे उसकी ओर उन्मुख होते हैं।

ब्रह्मा जी—कहो वत्स! कैसे आना हुआ? मनुष्य अपनी परेशानी बताता है। ब्रह्मा जी गंभीर होकर कुछ समय मौन-चिंतन करते हैं। फिर नेत्र खोलकर एक दिव्य मुस्कान से सिर हिलाते हुए।

ब्रह्मा जी—चलो मनुष्य! आज हम स्वयं धरती पर आएंगे। सभी कर्मेन्द्रियों को हमारा यह संदेश देना।

मनुष्य—'जो आज्ञा' कहकर नतमस्तक होकर चला गया।

(तीसरा दृश्य)

चिंतित-सा मनुष्य बारम्बार अपने माथे का पसीना पोंछता है और खिड़की से बाहर देखता है मानो किसी की प्रतीक्षा में हो।

सहसा आहट होती है। वह लगभग भागता हुआ सा द्वार तक पहुंचता है। द्वार के पट स्वतः ही खुल जाते हैं।

सामने तेजस्वी ब्रह्मा जी अपने लेखाकार 'चित्र', 'विचित्र' तथा 'मां सरस्वती जी' के साथ भूमि पर उतरते हैं।

मनुष्य साष्टांग प्रणाम करके उन्हें सादर अंदर लिवा लाता है।

(चौथा दृश्य)

समय—सायंकाल। एक सुंदर कमल सिंहासन पर ब्रह्मा जी विराजमान हैं। बराबर ही एक अन्य कमल सिंहासन पर मां सरस्वती जी भी विराजित हैं और पीछे ब्रह्मा जी के दोनों कंधों की तरफ कागज-कलम और पत्रम्-पुठपम् लिए हुए 'चित्र', 'विचित्र' खड़ हैं। सामने विशाल सभा लगी है। असंख्य प्राणी एक विचित्र समस्या का हल सुनने को उपस्थित हैं।

तत्पश्चात् सभी कर्मेन्द्रियों को सभा में पेश किया जाता है।

हर कर्मेन्द्री को अपने-अपने पक्ष में बोलने का अवसर दिया जाता है।

सभी ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

सर्वप्रथम आंखें सामने आती हैं।

आंखें—देखिए महाराज! अखिल भूमण्डल की सर्व उपलब्धियों का दर्शन प्रत्यक्ष रूप में हम ही कराती हैं। हमारी कृपा से ही मनुष्य सांसारिक सौंदर्य को देख सकता है। मनुष्य शरीर में हमारा महत्त्व सर्वाधिक है अतः इस शरीर का 'राजा' हमें ही होना चाहिए।

कान—नहीं महाराज! सबसे बड़े हम हैं। सौंदर्य के दर्शन संगीत श्रावण के बिना कुछ भी नहीं। हम ही मनुष्य को तरह-तरह के मधुर स्वर सुनाते हैं।

मुख—वाह! मैं कोई कम हूं, जिसके बिना मनुष्य अपने मन के भाव भी व्यक्त नहीं कर सकता। मैं न होऊं तो स्वर बाहर कैसे निकले?

इस प्रकार सभी ने बारी-बारी से अपना महत्त्व जताया।

अंत में सभी मौन होकर ब्रह्मा जी की ओर रहस्यमयी जिज्ञासावश देखने लगे।

ब्रह्मा जी कुछ क्षण ध्यान मग्न रहे। फिर धीरे-धीरे उनके नयन खुले।

ब्रह्मा जी—सर्व प्राणीजन्! आपकी समस्या है कि इस शरीर में सबसे बड़ा कौन? यह सिद्ध किया जाय और जो सर्व सम्मति से बड़ा माना जाए वही सभी कर्मेन्द्रियों का राजा हो।

इस कार्य के लिए आप सभी के समक्ष एक ऐसा प्रयोग किया जाएगा जो सभी को स्वीकार्य होगा।

सभी कर्मेन्द्रियां बारी-बारी से एक-एक मास के लिए शरीर से बाहर निकल प्रवास पर जाएंगी।

सर्वप्रथम हम आंखों को एक मास के लिए शरीर छोड़कर जाने का आदेश देते हैं। फिर देखेंगे कि आंखों के बिना मनुष्य शरीर कैसे निर्वाह करता है।

एक मास पश्चात् आंखों के लौट आने पर, कर्ण महोदय एक मास के लिए प्रवास पर जाएंगे, फिर मुख, फिर हाथ... इसी प्रकार हर कर्मेन्द्री हर प्रतिमास शरीर त्याग कर जाएगी।

अन्ततोगत्वा हम निर्णय देंगे कि सबसे बड़ा कौन?

इतना उच्चारण कर ब्रह्मा जी सभा विसर्जित करते हैं।

(पांचवां दृश्य)

१२ मास पश्चात्। समय—सायंकाल। पुनः ब्रह्मा जी की सभा लगी हुई है।

आज अंतिम निर्णय सुनने को इच्छुक आगुंतक नर-नारियों की भीड़ से सभाकक्ष खचाखच भरा हुआ है।

सभी कर्मेन्द्रियां भी उपस्थित हैं। सामने कमल सिहांसन पर ब्रह्मा जी विराजमान हैं। सर्वप्रथम मनुष्य को बुलाया जाता है।

ब्रह्मा जी—हे मानव! एक-एक मास के लिए प्रवासित सभी कर्मेन्द्रियां तुम्हारे शरीर में पुनः लौट आई हैं। अब तुम बताओ इनके न रहने पर तुम्हारे शरीर की क्या दशा हुई?

तदुपरांत ही हम निर्णय देंगे कि सबसे बड़ा कौन?

मनुष्य—सर्वप्रथम मैं आंखों से निवेदन करता हूं।

आंखें—हां! हां! बताइए, हमारे बिना तो जीना....

मनुष्य—आंखों के बिना मेरा निर्वाह लाठी के सहारे से हो गया। जिस प्रकार अंधे व्यक्ति जीवित रहते हैं, वैसे ही धीरे-धीरे मैं भी अभ्यस्त हो गया। मेरा कोई भी कार्य रुका नहीं...

(अपनी प्रशंसा सुनने को आतुर नयन यह सुनते ही झुक गए)

मनुष्य—कानों के बिना भी मैं अच्छी तरह जीवन बिता सका। कानों के चले जाने के बाद जल्दी ही मैं संकेतों और होठों के आकार से मैं बोली का भाव समझने लगा। यह सुनकर कान भी

चुपचाप बैठ गए।

मनुष्य–मुख के बिना भी मेरा कार्य ठीक उसी प्रकार चलता रहा जैसे गूंगे व्यक्ति का चलता है।

(इस प्रकार मनुष्य ने सभी कर्मेन्द्रियों के प्रवास कालीन समय में शरीर की स्थिति का वर्णन किया)

अब पुनः सभी के मस्तिष्क में यह प्रश्न कौंधने लगा कि आखिर सबसे बड़ा कौन?

निर्णय सुनने की प्रतीक्षा में सभी ब्रह्मा जी की ओर उन्मुख हुए।

तभी ब्रह्मा जी ने गंभीर स्वर में पूछा–हे मानव! अब सभी कर्मेन्द्रियां तुम्हारे शरीर में मौजूद हैं।

मनुष्य–(नतमस्तक होकर)–जी महाराज! सभी मौजूद हैं।

ब्रह्मा जी–सभी सकुशल हैं?

मनुष्य–जी हां! सभी कुशलपूर्वक हैं।

ब्रह्मा जी–ठीक है। अब मैं एक अन्य अस्तित्व को आदेश देता हूं कि यह शरीर त्याग दें।

सभी जिज्ञासावश इधर-उधर देखने लगे कि किसे आदेश मिला है? पर कुछ समझ न पाए।

मनुष्य–महाराज! आपका आदेश किसके प्रति है?

ब्रह्मा जी–मेरा आदेश जिसके प्रति है उसने समझ लिया है।

तभी एक चमत्कार हुआ। मनुष्य की भृकुटि में से प्रकाश बिंदु चमका और धीरे-धीरे बाहर निकला।

उस ज्योति के निकलते ही खुली रहते भी आंखें देख न सकीं। कानों का सुनना स्वतः बंद हो गया। हाथों-पैरों का हिलना-डुलना स्वतः ही बंद हो गया।

फलस्वरूप मनुष्य धरती पर गिर पड़ा। उसका निश्छल शरीर धीरे-धीरे ठंडा हो गया।

सारा खेल ही समाप्त हो गया। यह देखकर ब्रह्मा जी ने ज्योति को पुनः मनुष्य शरीर में प्रविष्ट होने का आदेश दिया। उसके प्रविष्ट होते ही धरती पर चित्त पड़े निश्छल मनुष्य में पुनः प्राण फूंके गए। हलचल प्रारम्भ हो गई–देखने, सुनने, कर्म करने की शक्तियां उस एक के प्रविष्ट होने से पुनः जागृत हो उठीं। 'सबसे बड़ा कौन'? प्रश्नचिन्ह समाप्त हो गया...। और सभी को उत्तर मिल चुका था अपने प्रश्न का।

तदुपरांत सभी कर्मेन्द्रियां झगड़ा समाप्त करके अपना काम प्यार से करने लगीं। □

पृष्ठ २४ का शेष

है तो जीवन में निम्नलिखित विशेषताओं की अनुभूतियां होती हैं–

१. वह मोहजीत अर्थात् सहज ही नष्टोमोहा बनकर स्मृतिलब्धा बन जाता है।

२. सभी लौकिक सम्बंध और उनसे प्राप्त होने वाली रसनायें नीरस अनुभव होने लगती हैं।

३. वह सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलता रहता है।

४. उसका जीवन सर्व प्राप्तियों, दिव्यगुणों एवं शक्तियों की खान बन जाता है।

५. प्रवृत्ति में रहते हुए भी वह कमल पुष्प समान न्यारा व प्यारा जीवन अनुभव करता है।

६. वह सदा खुशी, शान्ति व आनंद में मगन रहता है।

७. किसी भी व्यक्ति, वस्तु तथा वैभव के प्रति आकर्षण नहीं होता है।

८. किसी भी सम्बंध के प्रति लगाव व फसाव नहीं होता।

९. बुद्धि सदा लौकिकता से उपराम, अलौकिक अनुभूतियों में रमण करती है।

१०. किसी भी विपरीत परिस्थिति में किसी व्यक्ति की याद न आकर परमात्मा की याद आयेगी।

११. सदा एक ही लगन में मगन तथा एकरस स्थित का अनुभव होगा।

१२. जीवन फरिश्तों का जीवन बन जाता है। □

(पृष्ठ १२ का शेष)

में सीख लिया है, तो फिर इन्हें हमें ही अब दृढ़ निश्चय के द्वारा उनकी हानियों को ध्यान में रखते सदैव के लिए छोड़ना होगा।

ईश्वरीय शिक्षाओं एवं राजयोग के अभ्यास से कुव्यसनों से मुक्ति–

यह तब और ही किसी व्यक्ति के लिए सहज हो जाता है, जब वह ब्रह्मातन के माध्यम से परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान ग्रहण कर राजयोग का अभ्यास करता है। राजयोग के निरंतर अभ्यास से सात्विक आहार ग्रहण करने से, नित्य सत्संग से व दैवीगुणों की धारणा से लाखों लोगों ने तमाम बुराइयों से अपने को मुक्त किया है। बुरी आदतों से ग्रसित आत्माओं का हम ब्रह्माकुमारियां व कुमार आह्वान करते हैं कि वे केंद्रों पर पधारें और कुव्यसनों से मुक्ति मार्ग को जानें। तभी तो हम नारा लगाते हैं–"छोड़ो बीड़ी, छोड़ो शराब, ज्ञान से लो सतयुग का ताज।" □

(पृष्ठ २८ का शेष)

ईश्वरीय सेवा के बल की गुप्त मदद मिलती है

करें क्योंकि ईश्वरीय सेवा में जैसा संग वैसा रंग जरूर लगता है।

- यह अंतिम जन्म की कुछ घड़ियां ईश्वर को ईश्वरीय सेवा के लिए ही दी हैं।
- संगमयुग पर ईश्वर का दिया हुआ मेवा (खुशी, आनंद, शक्ति आदि) ईश्वरीय सेवा द्वारा ही सेवन किया जा सकता है, इसलिये गायन है कि 'कर सेवा तो खा मेवा'।
- त्याग और तपस्या की आधारशिला भी ईश्वरीय सेवा है क्योंकि बापदादा कहते हैं, "राजयोगी बनो, कर्मयोगी बनो, कर्तातीत बनो।"

ईश्वरीय सेवा हमें किसी भी प्रकार की मिले चाहे मनसा की, चाहे वाचा की, चाहे कर्मणा अर्थात् स्थूल, जैसे सफाई करने की, भोजन बनाने की, कपड़े धुलाई करने की व यज्ञ की कोई भी सेवा हो परंतु सेवा के समय हमारे अंदर सेवा की अपार खुशी हो, योगयुक्त स्थिति हो, निःस्वार्थ भाव हो, सेवा के सिवाय और फालतू संकल्प न हों, दूसरों के प्रति रहमदिल हों अर्थात् अहम् और वहम से परे रहमदिल हों, ऐसे स्वरूप द्वारा की हुई सेवा से हम इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का 'संतुष्टता' का सर्टिफिकेट बापदादा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा प्राप्त कर संपूर्ण कर्मातीत स्थिति की पदवी को प्राप्त कर सकते हैं और बापदादा की गुप्त मदद को वरदान के रूप में ले सकते हैं क्योंकि बापदादा कहते हैं हिम्मत-ए-मर्दा, मदद-ए-बाप। □

फिज़ी: *ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् डॉ. टम्बिया (मेम्बर पार्लियामेन्ट) दादी जानकी, ब्र.कु. भावना, भ्राता रवि भाई तथा बी.के. रसिक भाई ग्रुप फोटो में।*

भावरा: में मुन्सिफ़ मैजिस्टेट भ्राता भगवानदास को चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र० कु० चन्द्रकान्ता जी।

शिमला: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् मुख्य मन्त्री भ्राता वीरभद्र सिंह, उनकी धर्म पत्नी तथा जयप्रकाश नेगी व अन्य को समझाते हुए ब्र० कु० अरूणा।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र. कु. आत्म प्रकाश, बी ९/ १९ कृष्णा नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रैस कृष्णा नगर, देहली-५१ से छपवाया Regd No. 10563/65-D. (E)-70